॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नवतत्त्व सार्थ)

प्रश्न १. अ. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. जीव तत्त्व	–	अ. अचेतन
२. आश्रव तत्त्व	–	ब. कर्मों का अंशतः क्षय
३. मोक्ष तत्त्व	–	क. कर्मों का प्रवेश
४. अजीव तत्त्व	–	ड. चेतनायुक्त
५. निर्जरा तत्त्व	–	इ. कर्मों से मुक्त

ब. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. अहंकार का त्याग आर्जव है।

२. नाम कर्म का स्वभाव चित्रकार के समान है।

३. पुण्योपार्जन के ४२ कारण बताये हैं।

४. परोक्ष में दूसरे के दोष प्रकट करना पैशुन्य कहलाता है।

५. आत्मा से कर्मों का अलग होना बंध है।

क. नीचे दिये हुए तत्त्वों में से कौन–से तत्त्व हेय, ज्ञेय और उपादेय हैं बताइए। **(५)**

१. अजीव तत्त्व

२. पाप तत्त्व

३. संवर तत्त्व

४. नैगम नय की दृष्टि से पुण्य तत्त्व

५. बंध तत्त्व

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. प्राण २. साता वेदनीय ३. तीर्थ सिध्द

४. प्रज्ञा परिषह ५. पुद्गलास्तिकाय ६. कषाय

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब दीजिए। **(२०)**

१. अजीव तत्त्व में रहे पांच द्रव्यों का स्वरूप लिखिए।

२. त्रसदशक की प्रकृतियों का स्वरूप लिखिए।

३. बाह्य तप के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

४. किन्हीं पांच कर्मों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

५. मोक्ष तत्त्व को जानने का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से दीजिए। **(१५)**

१. २५ क्रियाओं में से किन्हीं १५ क्रियाओं का वर्णन कीजिए।

२. पाप तत्त्व किसे कहते हैं? पाप के ८२ भेदों में से किन्हीं १५ भेदों का वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – जैनत्व की झांकी)

प्रश्न ५. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. जैन शास्त्रों में दान के ..... प्रकार बताये हैं। (सात, तेरह, चार)

२. भ. पार्श्वनाथ का धर्म सर्वथा ..... था। (प्रतिहार्य, व्यवहार्य, चातुर्याम)

३. धर्म के मुख्यतया दो अंग हैं – तत्त्वज्ञान और .....। (आचरण, दर्शन, अहिंसा)

४. भ. ऋषभदेव ..... नगरी के राजा थे। (चंपापुरी, द्वारिका, अयोध्या)

५. जैन धर्म को ..... से कोई द्वेष नहीं है। (व्यक्ति, वेदों, समाज)

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अनेकांतवाद २. सम्यग् ज्ञान ३. आस्रव तत्त्व

४. अन्तरात्मा ५. देव ६. त्रिपदी

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. आदर्श साधु कौन होता है, स्पष्ट कीजिए।

२. भ. पार्श्वनाथ के समय तापस कैसी साधना करते थे?

३. धर्म का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से दीजिए। **(१५)**

१. दान और उसके भेदों का सविस्तर वर्णन कीजिए।

२. 'ईश्वर जगत्कर्ता नहीं है', इसको स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – १)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित धातु और शब्दों के यथा निर्दिष्ट रूप लिखिए। **(५)**

शब्द/धातु	लिङ्ग/लकार	विभक्ति/पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. क्षमा	स्त्रीलिङ्ग	चतुर्थी			
२. स्वसृ	स्त्रीलिङ्ग	द्वितीया			
३. सर्व	पुल्लिङ्ग	षष्ठी			
४. अर्च्	लोट्	उत्तम			
५. गण्	लट्	प्रथम			

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित समय को संस्कृत में लिखिए। **(५)**

१. २.३५ २. ५.२० ३. ४.४५

४. १२.५२ ५. ७.१६

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. सापेक्ष अव्यय २. व्यञ्जन सन्धि ३. करण कारक

४. वर्ण संयोजन ५. उच्चारण स्थान ६. प्लुत स्वर

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'विवेकः सह संपत्या .....' सुभाषित को शुद्ध लिखकर उसका भावार्थ अपनी भाषा में लिखिए।

२. 'देशप्रेम' कथा का सार एवं उससे प्राप्त शिक्षा को अपने शब्दों में लिखिए।

३. 'अरि' (पु.) एवं 'तनू' (स्त्री.) शब्द के सभी विभक्तियों के रूप लिखिए।

४. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

अ. जो पढने के लिए आयेगा वह पण्डित होगा। आ. तुम दोनों परीक्षा में सफल हुए।

इ. मैं उस कलम से पत्र लिखता हूं। ई. सभी छात्रों की यह कक्षा है।

उ. तुम सब घर से बाहर बैठो।

५. निम्नलिखित दो पदों की संधि कीजिए।

अ. भव्या + आकृतिः आ. सु + आगतम् इ. पो + इत्रम्

ई. प्रभो + अनुग्रहणः उ. तव + उत्कर्षः

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. लकार किसे कहते हैं, उनके सभी भेदों का स्वरूप लिखकर पांचों लकारों के स्वनिर्मित तीन–तीन वाक्य

P.T.O

लिखिए।

२. संख्यावाचक शब्दों का परिचय लिखते हुए क्रमवाचक संख्याविशेषण कैसे बनते हैं सोदाहरण लिखिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थ सूत्र)

प्रश्न क्र. ६. अ. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. क्षयोपशमजन्य अवधिज्ञान के कितने भेद हैं?

२. क्षायिक भाव के कितने भेद हैं?

३. पांचवें नरक की उत्कृष्ट आयु कितनी है?

४. कितने कारणों से सातावेदनीय कर्म का आश्रव होता है?

५. ग्रहों की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है?

ब. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. नूतन पर्याय की उत्पत्ति को क्या कहते हैं?

२. दिशाओं की मर्यादा करना ये कौन–सा व्रत है?

३. अंतराय कर्म के क्षय से कौन–सा ज्ञान होता है?

४. परिग्रह का त्याग करना क्या है?

५. आयुष्य कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है?

प्रश्न क्र. ७. नीचे दिये हुए अर्थ किस अतिचार के हैं और वे अतिचार किस व्रत के हैं, बताइए। **(१०)**

१. मन से दृष्ट चिंतन करना।
२. लकडी आदि से मारना।
३. न्यूनाधिक नापना।
४. प्रमाद के कारण नियम की मर्यादा को भूल जाना।
५. मादक द्रव्य का सेवन करना।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. देवायु का बंध किन कारणों से होता है, स्पष्ट कीजिए।

२. 'पीत पद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु' इस सूत्र को स्पष्ट कीजिए।

३. नित्य का लक्षण क्या है, उसे स्पष्ट कीजिए।

४. बंध के हेतु को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. पहले अध्ययन के आधार से पांच ज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. ध्यान किसे कहते हैं? उसके भेदों को स्पष्ट करके, कौन–से गुणस्थानवाले जीवों को कौन–कौनसा ध्यान होता है, स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – २)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित पदों की सन्धि कीजिए। **(५)**

१. सङ्गात् + आरोहति २. सम् + चालकः ३. सद्धिः + एव

४. मृत्युः + च ५. यस्मिन् + उपयोगः

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित शब्द/ धातुओं के रूप पहचानिए। **(१०)**

रूप	मूलशब्द/धातु	लकार/लिङ्ग	विभक्ति/पुरुष	वचन
१. प्रेम्नोः				
२. तुदेताम्				
३. अनड्वान्				
४. अद्यात				
५. गीर्षुः				

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित वाक्यों का उपपद विभक्ति के अनुसार संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. तुम मलया के साथ बाजार आओ।

२. शक्ति से हीन व्यक्ति कैसे बैठा था?

३. बालक माता पर विश्वास करता है।

४. साधक गलत रास्ते से हट जाये।

५. दाता याचकों को आहार देगा।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं तीन सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. 'अकरुणत्वमकारण .....' सुभाषित को अन्वय एवं हिंदी भावार्थ के साथ शुद्ध लिखिए।

२. 'मघवन्, रुच् , दिश्' शब्दों के अथवा 'चम्' धातु के सभी लकारों में रूप लिखिए।

३. 'सञ्चितार्थोऽपि नश्यति' कहानी का भावार्थ एवं शिक्षा अपने शब्दों में लिखिए।

४. षष्ठी उपपद विभक्ति के नियमों को स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।

५. निम्नलिखित संवाद को निर्देशानुसार पूर्ण कीजिए।

शिष्यः – नमो नमः गुरुदेव!

गुरुः – सुप्रभातम् ..... ! (राम)

गुरुः – सर्वं कुशलम् इति मन्ये।

शिष्यः – सर्वं कुशलम् आचार्यवर्य! ..... (अस्मद्) एकः प्रश्नः अस्ति।

P.T.O

गुरुः – उत्तमम्, ... (पृच्छ)।

शिष्यः – अनुशासनम् इति .....(विषये) ज्ञातुम् इच्छामि।

गुरुः – उत्तमम्।

शिष्यः – आचार्यवर्य! छात्रजीवने ..... (अनुशासन) का भूमिका?

गुरुः – इदानीम् अहं प्रश्नं ..... (पृच्छ)। छात्रजीवने एकाग्रतायाः आवश्यकता अस्ति वा?

शिष्यः – अत्यावश्यकम्।

गुरुः – ..... (तद्) एकाग्रता अनुशासनेन आगच्छति।

गुरुः – बहुविधक्रियाकलापेषु प्रतिभागिता कथं ..... (सम्भव)?

शिष्यः – समयप्रबन्धनेन।

गुरुः – तन्निमित्तम् अनुशासनम् ..... (आवश्यक)।

गुरुः – छात्रः चिन्तामुक्तः भवेत् वा?

शिष्यः – अत्यावश्यकम्।

गुरुः – अनुशासनेन चिन्ता न ..... (संभव्)।

गुरुः – उत्तमशैक्षणिकप्रदर्शनं ..... (किम्) संभवति?

शिष्यः – ..... (अभ्यास)परिश्रमेण च।

गुरुः – तन्निमित्तम् अनुशासनम् अपेक्षितम्।

गुरुः – इदानीम् अहं ..... (प्रश्न) पृच्छामि। अनुशासनं केन स्थापनीयम्?

शिष्यः – ..... (आचार्य)।

गुरुः – नैव, आत्मना।

शिष्यः – धन्यवादः, ... (मार्गदर्शन)।

गुरुः – कल्याणमस्तु।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. चित्–चन प्रत्यय का प्रयोग कैसे किया जाता है अपनी भाषा में लिखते हुए 'अपि' प्रत्यय लगाकर 'किम्' शब्द के तीनों लिङ्गों में रूप लिखिए।

२. विशेषण का परिचय देते हुए विशेषण युक्त स्वनिर्मित १५ वाक्य संस्कृत में लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – १)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्राकृत शब्द लिखिए। **(५)**

१. क्षुधा २. यतना ३. शकटः ४. मार्गः ५. अध्यायः

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित संधियों का विच्छेद कीजिए। **(५)**

१. विमलमणंतं २. जहत्ति ३. सुहेसिणो ४. नीईसरो ५. निज्जरट्ठा

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. प्राकृत में अजन्त शब्द कितने प्रकार के होते हैं और कौन–से?

२. प्राकृत में काल कितने प्रकार के होते हैं और कौन–से?

३. प्राकृत में व्यंजन के प्रकार कितने हैं और कौन–से?

४. अव्यय संधि के बताये हुए कोई २ नियम लिखिए।

५. प्राकृत में कितने स्वर नहीं होते हैं और कौन-से?

६. प्राकृत में कितने कारक होते हैं और कौन-से?

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. प्राकृत में संयुक्त व्यंजनों के स्थान पर क्या-क्या होता है, ग्रंथ से भिन्न उदाहरणों से लिखिए।

२. भगवान महावीर स्वामी के अंतेवासियों का परिचय अपनी भाषा एवं शब्दों में लिखिए।

३. प्राकृत वर्णमाला का परिचय देते हुए किन्हीं पांच मुख्य बिंदु को सोदाहरण लिखिए।

४. 'दिट्ठी' एवं 'चंचु' शब्द के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

५. निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

अ. ममत्वभाव किसी में भी नहीं रखना चाहिए।

आ. हम सब गुरु का विनय करते हैं।

इ. क्षत्रिय व्यक्ति युद्ध में जीतता है।

ई. मनुष्य गुणों को देखता है।

उ. शिष्य कहानी कहता है।

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. प्राकृत व्याकरण में कितने कारक बताये गए हैं, उन सभी का स्वरूप स्वनिर्मित उदाहरणों के साथ लिखिए।

२. पांचों लकारों का अपनी भाषा में परिचय देकर सभी लकारों के स्वनिर्मित तीन-तीन उदाहरण लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १ से ५)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. जीव को ..... श्रवण करना दुर्लभ बताया है।

२. गुरु सेवा पर्युपासना करनेवाला शिष्य ..... कहलाता है।

३. जीवन ..... है।

४. निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रमणों के ..... परिषह बताये हैं।

५. मरण के दो प्रकार है – सकाम मरण, ...।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. निम्नलिखित गाथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

आणाणिद्देस करे, गुरुणमुववाय कारए।

इंगियागार संपण्णे, से विणीए त्ति वुच्चइ।।

२. संसार में जीव को कितने और कौन–से अंग दुर्लभ बताये हैं, स्पष्ट कीजिए।

३. अध्ययन के आधारपर असंस्कृत आयु क्या है उसे स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अकाम मरण इस अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

२. परिषह इस अध्ययन के आधार से किन्हीं १५ परिषहों को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – जैन तत्त्व दीपिका)

प्रश्न ४. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. निगोद को साधारण कहते हैं।

२. शिवराज ऋषि स्वलिंगसिद्ध है।

३. वर्ग के समूह को कर्म करते हैं।

४. बारहवें गुणस्थान में ७ कर्मों की सत्ता होती है।

५. सूत्र के पढने से सम्यक्त्व होना सूत्ररुचि है।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अतिचार २. आसेवनी शिक्षा ३. द्रव्यत्व गुण

४. सकल पारमार्थिक प्रत्यक्ष ५. प्रमाणांगुल ६. द्रव्य निक्षेप

P.T.O

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कल्पवृक्ष किसे कहते हैं? उसके प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

२. सामान्य गुण किसे कहते हैं? उसके मुख्य कितने भेद हैं?

३. विश्रांति कितने प्रकार की हैं उसके आधार से श्रावक की विश्रांतियों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. जीव किसे कहते हैं, यह बताकर स्थावर के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. साधु किसे कहते हैं? उनके आचार-व्यवहार को अपनी भाषा में लिखिए।

(खण्ड ग – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ)

प्रश्न ८. अ. सही पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. लोंकाशाह का ..... जीवन सुखी था। (व्यावहारिक, सांसारिक, आध्यात्मिक)

२. जीवराजजी महाराज ने ..... की रचना की है। (चौबीसी, आगम, श्लोक)

३. ..... जीवन है और विघटन मृत्यु है। (वाणी, आचार, संगठन)

४. आत्मारामजी म. अपने युग के एक विशिष्ट ..... महापुरुष थे। (प्रज्ञास्कंध, जातीस्कंध, गंभीर)

५. धर्मसिंह मुनि गुरु की आज्ञा से ..... में ठहर गये। (उपाश्रय, दरगाह, चर्च)

ब. सही है या गलत बताइए। **(५)**

१. आगम दर्शन का निर्मल आलोक जगमगा रहा है।

२. भ. ऋषभदेव का काल संक्रांति काल था।

३. सिद्धसेन को अपने प्रकांड-पांडित्य पर गर्व था।

४. सामवेद में भी अरिष्टनेमि का उल्लेख हुआ है।

५. विशेषावश्यक भाष्य आचार्य जिनभद्र की अंतिम रचना है।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कौन-से कुलकर के समय कौन-सी नीति प्रचलित थी बताइए।

२. भ. ऋषभदेव ने किस-किसकी स्थापना करके मानवजाति को नया प्रकाश प्रदान किया?

३. भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि, निर्वाणभूमि और माता-पिता का नाम बताइए।

४. कृष्ण की कौन-कौनसी महारानियों ने दीक्षा ग्रहण की?

५. कौन-से वेद और पुराण में भगवान अरिष्टनेमि का उल्लेख आया है?

६. आचार्य सकलकीर्ति के 'पार्श्वनाथ चरित्र' में भगवान पार्श्वनाथ ने कौन-कौनसे देशों में विहार किया था कोई भी ५ नाम बताइए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. भगवान ऋषभदेव के जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

२. आचार्य अमोलकऋषिजी म.सा. के व्यक्तित्व को स्पष्ट कीजिए।

३. भगवान महावीर के जीवन में आये हुए उपसर्ग, परिषहों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – लघुसिद्धान्तकौमुदी)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित सवालों का एक वाक्य में जवाब लिखिए। **(५)**

१. किनके आद्य उच्चारण को उपदेश कहते हैं?

३. अन्त्य हल् की इत्संज्ञा किस सूत्र से होती है?

२. लघुसिद्धान्तकौमुदी के रचयिता कौन है?

४. गुण संज्ञा किन-किन वर्णों की होती है?

५. 'स्' को 'ष्' करनेवाला सूत्र कौन-सा है?

प्रश्न क्र. २. निम्न प्रत्याहारों में कौन-कौनसे वर्ण आते हैं यह लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. अट्	२. झल्	३. हल्
४. छव्	५. भष्	६. अच्

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं ५ में सन्धि विधायक सूत्र का निर्देश करते हुए सन्धि कीजिए। **(१०)**

१. विपत् + चलति	२. नै + अकः	३. अस्तु + इयम्
४. अप + एधते	५. सम् + चालकः	६. अस्मिन् + लीनः

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ संज्ञाओं के सूत्र अर्थ सहित लिखिए। **(१०)**

१. इत् संज्ञा	२. संयोग संज्ञा	३. लोप संज्ञा
४. आम्रेडित संज्ञा	५. धातु संज्ञा	६. उपसर्ग संज्ञा

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं २ उदाहरणों की ससूत्र सिद्धि कीजिए। **(१०)**

१. धातृ + अंशः	२. तद् + शिवः	३. सुगण् + ईशः
४. सः + एषः		

(खण्ड ख – प्राकृत व्याकरण, द्वितीय पाद तक)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

जैसे निशाकरः – निसिअरो

१. अन्तर्विश्रम्भ	२. उद्विग्नया।	३. कसितम्
४. ग्रामेयका	५. लाहलः	६. धूमपटलः

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। (कोई ५) **(५)**

१. निपुंसणं	२. भुअयन्तं	३. मीसालिअं

४. वइस्साणरो ५. विआरुल्लो ६. झडिलो

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों के अर्थ और उदाहरण लिखिए। **(२०)**

१. क्त्वस्तुमत्तूण-तुआण २. ख-घ-थ-ध-भाम्

३. ष्प स्पयो फः ४. स्त्रीयामादविद्युतः

५. छायायां होऽकान्तौ वा ६. इ-जे-राः पादपूरणे

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ प्राकृत रूपों की सिद्धि कीजिए। **(१५)**

१. अवऊढो २. पइट्ठाणं ३. मडहसरिआ

४. वज्जरो ५. सिआवाओ

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किन्हीं ३ संस्कृत रूपों की प्राकृत में सिद्धि कीजिए। **(१५)**

१. हस्तौ २. उद्व्युढम् ३. कचग्रहः

४. क्षीरोदः ५. नूपुरम्

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण मीमांसा)

प्रश्न १. निम्नलिखित भेद किसका है, पहचानिए। (५)

१. उपेक्षणीय २. परोक्ष ३. साधर्म्य

४. अन्यथानुपपत्ति ५. अनैकान्तिक

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। (१०)

१. उपनय २. असिद्ध हेत्वाभास ३. संदिग्धसाध्यान्वय

४. उत्कर्षसमा ५. सामान्य छल ६. अपार्थक निग्रहस्थान

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सूत्रों का ससंदर्भ स्पष्टीकरण लिखिए। (१०)

१. प्रामाण्यनिश्चय: स्वत: परतो वा।

२. साधनमात्रात् तत्सिद्धे:।

३. वचनमुपचारात्।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। (१५)

१. साधन का लक्षण बताकर उसके प्रकारों को समझाइए।

२. ग्रन्थ के आधार से इन्द्रिय के स्वरूप को समझाकर उसके भेद-प्रभेदों का निरूपण कीजिए।

(खण्ड ख – तत्त्वार्थसूत्र)

प्रश्न ५. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत, लिखिए। (५)

१. ग्यारह परिषह घाति कर्म जन्य होते हैं।

२. दर्शनमोह चारित्रमोह के रूप में संक्रमण नहीं करता।

३. अप्रमत्तयोग से होनेवाला प्राणवध हिंसा है।

४. स्वेच्छापूर्वक भोगों का त्याग करना अकामनिर्जरा है।

५. धर्मास्तिकाय द्रव्य निष्क्रिय है।

प्रश्न ६. चतुर्थ पद पूर्ण कीजिए। (५)

१. निद्रा : दर्शनावरणीय कर्म :: सुभग : .....

२. वेदनीय कर्म : २ :: चारित्रमोहनीय कर्म : .....

३. ज्ञानावरणीय कर्म : ३० कोटाकोटी सागरोपम :: आयुष्य कर्म : .....

४. पुण्य रूप : ४२ प्रकृतियां :: पाप रूप : .....

५. सूक्ष्म : बादर :: साधारण : .....

P.T.O

प्रश्न ७. निम्नलिखित व्रत के निर्देशानुसार अतिचार एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. अचौर्य व्रत का दूसरा अतिचार

२. देशविरति व्रत का पांचवां अतिचार

३. अतिथिसंविभाग व्रत का प्रथम अतिचार

४. सत्य अणुव्रत का चतुर्थ अतिचार

५. अनर्थदण्ड विरमण व्रत का तीसरा अतिचार

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. प्रयोग क्रिया　　२. निसर्ग क्रिया　　३. अनाभोग क्रिया

४. मूलगुणनिर्वर्तना　　४. सहसा निक्षेप　　६. परिदेवन

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ४ सूत्रों का ससंदर्भ अर्थ स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

१. नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास।　　२. विग्रहगतौ कर्मयोग:।

३. भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषा:।　　४. आर्या म्लेच्छाश्च।

५. गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीन:।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. किताब के आधार पर ध्यान का स्वरूप समझाकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।

२. सिद्धों की विशेषता का विस्तार से निरूपण कीजिए।

। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग ४)

प्रश्न १. अ. निम्न गुणस्थानों में कितने कषाय होते हैं बताइए। **(५)**

१. सूक्ष्मसंपराय २. मिश्र ३. अप्रमत्त संयत

४. देशविरति ५. सयोगिकेवली

ब. निम्नलिखित शब्द समूहों से अनुचित पद को अलग कीजिए। **(५)**

१. सूक्ष्मसंपराय संयम, यथाख्यात संयम, बाल संयम, देशविरति संयम

२. क्रोध, स्त्रीवेद, मान, माया

३. एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेइन्द्रिय

४. देशविरति, क्षायिक, मिथ्यात्व, औपशमिक

५. भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, नारकी

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ मार्गणाओं में गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या कितनी हैं लिखिए। **(१०)**

१. मनोयोग २. तिर्यंच गति ३. लोभ

४. परिहारविशुद्धि ५. शुक्ललेश्या ६. सास्वादन सम्यक्त्व

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कषाय मार्गणा के भेदों का स्वरूप लिखिए।

२. जीवस्थानों में लेश्या का स्वरूप बताइए।

३. लब्धि और करण अपर्याप्त-पर्याप्त किसे कहते हैं स्पष्ट कीजिए।

४. गुणस्थान किसे कहते हैं स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निम्न गाथा को स्पष्ट करे –

तिअनाण दुदसाइमदुगे अजइ देसि नाणदंसतिगं।
ते मीसि मीस समणा जयाइ केवलिदुगंतदुगे।।

२. छह भाव और उनके भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन २१ से ३६)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. अष्टम ग्रैवयेक के देवों की उत्कृष्ट आयुस्थिति कितनी हैं?

P.T.O

२. किसको समस्त औषधियों के जल से स्नान करवाया?

३. योगों का सम्यक प्रकार से निग्रह करना क्या हैं?

४. दसवीं समाचारी का नाम क्या है?

५. गार्ग्याचार्य ने शिष्यों की दृष्टता और नीचता बताने के लिए कौन-सा शब्द प्रयोग किया?

ब. निम्न प्राकृत शब्द के लिए हिन्दी शब्द लिखिए। **(५)**

१. अत्थलोलाणं २. पज्जवचरओ ३. पावसुयप्पसंगेसु

४. इंगिय ५. संवच्छरे

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. ३१ वें अध्ययन में १३, १४, १५ और १६ वें बोल कौन-से बताये हैं।

२. चतुरिन्द्रिय के भेद, उदाहरण और भवस्थिति बताइए।

३. एषणा समिति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

४. अमूढ दृष्टि की परिभाषा लिखिए।

५. अनशन तप का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

६. शुक्ल लेशी के लक्षण लिखिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कापोतलेश्या के वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, स्थिति आदि का वर्णन कीजिए।

२. आयुष्य और अंतराय कर्म की व्याख्या, प्रकृतियां और स्थिति लिखिए।

३. पौरुषी शब्द का अर्थ बताते हुए कौन-से महीने में कैसी पौरूषी होती है?

४. अरूपी अजीव के बारे में आप क्या जानते हैं?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. २९वें अध्ययनानुसार किन्हीं १० बोलों से होनेवाले लाभ को लिखिए।

२. मनोज्ञ रूप, अमनोज्ञ रूप के स्वरूप, लाभ, हानि को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित अव्ययों से संस्कृत में स्वनिर्मित वाक्य बनाइए। **(५)**

१. स्वस्ति २. सार्धम् ३. ऋते

४. अधिपति ५. अधोऽधः

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित वाक्य उपपद विभक्ति के अनुसार शुद्ध लिखिए। **(५)**

१. कश्मीरेण आरभ्य कन्याकुमारीपर्यन्तं भारतवर्षम् अस्ति।

२. श्यामला अध्ययनाय कृते विद्यालये अगच्छत्।

३. तस्य गृहस्य निकषा कार्यालयं वर्तते।

४. मम भोजनस्य अनुरक्तिः आसीत्।

५. अहं नेत्रात् हीनं बालकं स्मरामि।

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. 'ल्यप्' प्रत्ययान्त शब्द के लोप होनेपर उसके कारक में किस विभक्ति के स्थान पर कौन–सी विभक्ति होती है?

२. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असुय् धातुओं का अर्थ लिखकर उनके योग में कौन–सी विभक्ति आती है, लिखिए।

३. हेतु साधारणतया किसका जनक हो सकता है और उसमें कौन–सी विभक्ति होती है?

४. साधु और निपुण के योग में किस अर्थ में कौन–कौनसी विभक्ति होती है?

५. किसका किसके साथ निरंतर संयोग होने पर द्वितीया विभक्ति होती है?

६. 'देवतासम्प्रदाने' पद से क्या अर्थ फलित होता है?

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों का स्वनिर्मित उदाहरण के साथ अर्थ लिखिए। **(१५)**

१. तथायुक्तं चानीप्सितम्।

२. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्।

३. कृत्यानां कर्तरि वा।

४. तुमर्थाच्च भाववचनात्।

५. अधिपरी अनर्थकौ।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. करण कारक के उपपद विभक्ति के सूत्रों को सोदाहरण लिखिए।

२. 'सप्तम्यधिकरणे च' इस सूत्र को अपनी भाषा में समझाइए।

P.T.O

(खण्ड ख – हेम प्राकृत व्याकरण तृतीय–चतुर्थ पाद)

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित प्राकृत रूपों के संस्कृत में रूप लिखिए। (कोई ५) (५)

१. उद्धब्भुअ २. वहू रेहन्ति ३. विसूरइ
४. तुवरह ५. णीरवइ ६. उच्छाणो

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित संस्कृत रूपों के प्राकृत में रूप लिखिए। (कोई ५) (५)

१. परगुणलघुकायाः २. युध्यमानानाम् ३. रे निर्घृणक
४. खल्वाटम् ५. क्षामितम् ६. अकार्षीत्

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ क्रियाओं से प्राकृत वाक्य बनाइए। (१०)

१. मिलाअइ २. दुब्भिहिइ ३. छिविज्जइ
४. सहेसइ ५. हुवीअ ६. सुणामु

प्रश्न क्र. ९. नीचे दिए किन्हीं ३ सूत्रों के सोदाहरण अर्थ लिखिए। (१५)

१. क्त्व इ–इअ–इवि–अवयः २. ईअ–इज्जौ क्यस्य
३. इदुतो दीर्घः ४. तदो णः स्यादौ क्वचित्
५. णं नन्वर्थे

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१५)

१. मागधी भाषा के लक्षण ससूत्र एवं सोदाहरण लिखिए।

२. किन्हीं ३ गाथाओं के अर्थ लिखकर रेखांकित पद में किस सूत्र से क्या परिवर्तन हुआ है लिखिए।

अ. गुणहिँ न संपइ, कित्ति पर फल लिहिआ भुञ्जन्ति।
केसरि न लहइ बोड्डिअ वि गय लक्खेहिं घेप्पन्ति।।

आ. देसुच्चाडणु सिहि–कढणु घण–कुट्टणु जं लोइ।
मंजिट्ठए अइरत्तिए सत्थु सहेव्वउँ होइ।।

इ. साहु वि लोउ तडप्फडइ वड्डत्तणहोँ तणेण।
वड्डप्पणु परिपाविअइ हत्थिं मोक्कलडेण।।

ई. सवधु केरप्पिणु कधिदु मइँ तसु पर सभलउँ जम्मु।
जासु न चाउ, न चारहडि, न य पम्हट्ठउ धम्मु।।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

षड्दर्शन समुच्चय

प्रश्न १. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. बौद्ध के शासन देवता ..... है। (तारादेवी, अम्बादेवी, जगदम्बा देवी)

२. ..... ध्यान सबसे बडा तप है। (धर्म, शुक्ल, शुद्ध)

३. आचार्य सिद्धसेन ने ..... द्वात्रिंशिकाएं लिखी। (बत्तीस, चौतीस, छत्तीस)

४. ..... के गर्भ में कलल जैसा पतला रहता है। (घोडी, हथिनी, कुत्ती)

५. कुटिया बनाकर रहनेवाले ..... कहे जाते हैं। (कुटीचर, हंस, परमहंस)

प्रश्न २. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. चार्वाक	–	अ. तीन प्रमाण
२. जैन	–	ब. एक प्रमाण
३. नैयायिक	–	क. दो प्रमाण
४. वैशेषिक	–	ड. छह प्रमाण
५. मीमांसक	–	इ. चार प्रमाण

प्रश्न ३. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. देवसुन्दरसुरि के शिष्य कौन थे?

२. ब्रह्मदैतवादी ने जगत को कैसा माना है?

३. सांख्य दर्शन के एक ग्रंथ का नाम लिखिए।

४. सिद्धों में कौन-से प्राण होते हैं?

५. मादक सामग्री से क्या उत्पन्न होती है?

प्रश्न ४. अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. पं. महेन्द्र कुमार ने टिप्पण लिखने का कार्य कब पूर्ण किया?

२. सर्वसिद्धान्त संग्रह में कितने दर्शनों का वर्णन है?

३. सर्वदर्शनसंग्रह में कितने दर्शनों का वर्णन है?

४. याज्ञवल्क्यस्मृति में कितने विद्यास्थानों का वर्णन है?

५. इस ग्रंथ में कितनी गाथाएं हैं?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. चार्वाक मतानुसार धर्म का स्वरूप क्या है?

P.T.O

२. आगम की परिभाषा लिखिए।

३. मंगल के भेद और उसके फल बताइए।

४. समुदय किसे कहते हैं?

५. प्रतिज्ञाहानि की व्याख्या उदाहरण सहित लिखिए।

६. जल सचेतन है, दो युक्तियों से स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. कायक्लेश तपरूप क्यों हैं?

२. असिद्ध हेत्वाभास की व्याख्या उदाहरण सहित लिखिए।

३. अनित्य द्रव्य किसे कहते हैं?

४. दाक्षिणबन्ध किसे कहते हैं?

५. वितण्डा किसे कहते हैं?

६. स्वसंवेदन प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. जैमिनीय मतानुसार वेद कैसे हैं, स्पष्ट कीजिए।

२. वैशेषिक मतानुसार कर्म कितने और कौन-से हैं, स्पष्ट कीजिए।

३. जैन दर्शनानुसार कालद्रव्य का वर्णन कीजिए।

४. बौद्ध मतानुसार प्रमाण किसे कहते हैं?

५. ईश्वर के कितने अवतार है? कौन-कौनसे?

६. सांख्य मतानुसार प्रमाण के भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

७. बंध की परिभाषा और भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. मुक्त जीवों के सुख के विषय में वादियों में कितने प्रकार के विवाद हैं?

२. नैयायिक मतानुसार तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

३. जैनमतानुसार जिनेन्द्र भगवान के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

४. परवादियों के ३६३ प्रकारों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – आचारांग सूत्र – प्रथम श्रुतस्कन्ध)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. ..... काय का शरीर चर्मचक्षुओं से दिखता नहीं हैं।

२. बहुश्रुत वक्ता ..... प्रकार की कथा कर सकते हैं।

३. यथार्थ वस्तुस्वरूप का नाम ..... है।

४. ..... अकेला ही कर्म करता हैं।

५. ..... निरवद्य कार्यों में ही प्रवृत्त होते हैं।

प्रश्न २. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. लुहातो	–	अ. लोकसंज्ञा
२. हंतव्वा	–	ब. मात्रा को जाननेवाला
३. वेरोवरते	–	क. संग या आसक्ति रहित
४. लोगसण्णं	–	ड. वैरभाव से उपरत
५. मत्तं जाणेज्जा	–	इ. चाबुक आदि से मारना-पीटना

प्रश्न ३. नीचे दिये गये वाक्य में एक शब्द गलत दिया हुआ है, उसे निकालकर सही शब्द लिखिए। (५)

१. नववें अध्ययन में भ. ऋषभदेव का वर्णन आता है।

२. स्थूलिभद्र ने निर्युक्तियों का निर्माण किया है।

३. अंगबाह्य आगमों की रचना गणधर करते हैं।

४. आचारांग सूत्र में १६,००० पद परिमाण है।

५. टीकाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। (१०)

१. मनुष्य की आयु कितनी दशाओं में विभक्त है? कौन-सी?

२. अनधिगम तत्त्व की व्याख्या लिखिए।

३. 'सुद्धेसणाए' शब्द का अर्थ और भेद बताइए।

४. वृत्तिकार ने याम के कितने अर्थ किए और कौन-से?

५. ग्लान होने के मुख्य कारण कौन-से हैं?

६. आदानस्रोत का स्वरूप समझाइए।

P.T.O

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. संधिं लोगस्स जाणित्ता आयओ बहिया पास।
२. सततं मूढे धम्मं णाभिजाणाति।
३. अरती तत्थ किं विधारए।
४. अणुपुव्वेण विमोहाइं।
५. अहुणा पव्वइए रीइत्था।
६. सोवधिए हु लुप्पती बाले।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(२०)**

१. अनगार के लक्षण कितने और कौन-से हैं? स्पष्ट कीजिए।
२. अचेलक प्रशस्त कब होता है बताइए।
३. आचारांग सूत्र में आये हुए अध्ययनों के नाम और उद्देशकों की संख्या बताइए।
४. धूत बनने का क्रम स्पष्ट कीजिए।
५. प्रव्रज्या ग्रहण के बाद मुनि किन-किन भूमिकाओं से गुजरता है?
६. 'एस खलु गंथे' इस सूत्रानुसार ग्रंथ शब्द का विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. समनोज्ञ और अमनोज्ञ साधक के स्वरूप को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
२. काम-वासना से चित्त को मुक्त करने के आलम्बन कितने हैं? स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड ख – राजप्रश्नीय सूत्र)

प्रश्न ८.निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. सेय राजा का राज्य किससे रहित था?
२. सूर्याभदेव के दाहिनी भूजा से कितने देवकुमार निकले?
३. किसका डोरा स्वर्णमय है?
४. सूर्याभदेव ने किससे बनी प्रर्माजनी को उठाया?
५. शिक्षाव्रतों के अभ्यास से किसमें स्थिरता आती है?

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. सूर्याभदेव के सभा में उपस्थित देव-देवियों का वर्णन कीजिए।
२. करणगुण और चरणगुण की व्याख्या और भेद लिखिए।
३. चित्त सारथी के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. भगवान द्वारा दी गई धर्मदेशना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
२. पल्योपम की व्याख्या और उसके भेदों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **तृतीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

स्याद्वादमंजिरी

प्रश्न क्र. १. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. द्रव्यत्व	–	अ. निग्रहस्थान
२. निरर्थक	–	आ. सहभावी धर्म
३. आकाश	–	इ. परोक्ष प्रमाण
४. ज्ञानोपयोग	–	ई. शब्द तन्मात्रा
५. ऊहा	–	उ. अपर सामान्य

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत लिखिए। **(५)**

१. वचन के वैभव को 'वाग्वैभव' अर्थात् वचनों की उत्कृष्टता कहते हैं।

२. निर्विकल्प प्रत्यक्ष को प्रमाण रूप से स्वीकार किया गया है।

३. जिनेन्द्र को ज्ञान की अपेक्षा सर्वव्यापक कहा है।

४. योगाचार बौद्ध के मत में ज्ञान ही परमार्थ सत् है।

५. घडा द्रव्य की अपेक्षा जल रूप से विद्यमान है।

प्रश्न क्र. ३. ये कौन–से दर्शन की मान्यताएं हैं, लिखिए। **(५)**

१. ज्ञानफल का आश्रय ज्ञान होता है और हानोपादान का अधिकरण ज्ञान से भिन्न पुरुष होता है।

२. सामान्य और विशेष स्वतंत्र है, क्योंकि प्रमाण के द्वारा वे ऐसे ही प्रतीत होते हैं।

३. धर्मी का परिणाम धर्म, लक्षण और अवस्था के भेद से तीन प्रकार का है।

४. आत्मा में क्रिया के विरोध होने से ज्ञान स्वप्रकाशक नहीं हो सकता।

५. आत्मा सावयव होने से उसमें परिमाण भी होता है।

प्रश्न क्र. ४. ये कौन है, पहचानिए। **(५)**

१. जीवादि पदार्थों में उनके धर्मों का वर्णन विधि–निषेध रूप से करने के लिए 'स्यात्' अव्यय का प्रयोग करना –

२. पक्ष और हेतु के कथन से दूसरे को साध्य का ज्ञान कराना –

३. पर्यायवाची शब्दों में भिन्न अर्थ को द्योतित करनेवाला नय –

४. प्रत्यक्ष और स्मरण के द्वारा होनेवाला संकलनात्मक ज्ञान –

५. सम्पूर्ण नयों को समान भाव से देखनेवाला –

P.T.O

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. श्री वर्धमान आदि विशेषण किस विशेष्य के हैं, विशेषण को विशेष्य के साथ लिखिए।

२. आप्तकथित आगम में कितनी उपाधियों का निषेध किया गया है? कौन-सी?

३. जगत्कर्ता में अप्रामाणिक लोग कितने सिद्धान्त मानते हैं? कौन-से?

४. वैशेषिक ईश्वर में कितने गुण स्वीकार करते हैं और कौन-से?

५. जिनेन्द्र के मूल अतिशय कितने हैं और कौन-से?

६. छल कितने प्रकार के हैं और कौन-से?

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. वैकारिक बंध　　२. मिथ्यात्व　　३. नित्य

४. प्रकरणसम　　५. अधृष्य　　६. ज्ञान

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों का निर्देशानुसार जवाब लिखिए। **(३०)**

१. ज्ञान आत्मा से भिन्न है या अभिन्न जैन दर्शन के अनुसार लिखिए।

२. ब्रह्माद्वैतवादी द्वारा मान्य माया का स्वरूप कैसा है, लिखिए।

३. भगवान का यथार्थवाद गुण कैसा है अपनी भाषा में लिखिए।

४. आगम पौरुषेय है या अपौरुषेय है यह सयुक्तिक लिखिए।

५. 'स्याद्वाद' में सभी दर्शनों का समन्वय कैसे है, समझाइए।

६. 'सत्' का लक्षण स्वनिर्मित उदाहरण से समझाइए।

७. पृथ्वी आदि सचेतन है या अचेतन सिद्ध कीजिए।

प्रश्न क्र. ८.निम्नलिखित किसी १ दर्शन की मान्यता अपने शब्दों में लिखिए। **(१५)**

१. नैयायिक दर्शन

२. बौद्ध दर्शन

प्रश्न क्र. ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सात नयों का स्वरूप और उसे माननेवाले दर्शन कौन-कौनसे हैं, अपनी भाषा में लिखिए।

२. वेदविहित हिंसा धर्म का कारण है या अधर्म का सयुक्तिक लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **तृतीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांकाः १००**

(खण्ड क – जैन तत्त्व प्रकाश)

प्रश्न १. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. अहि सर्प ..... ही वर्ण के होते हैं।

२. भ. महावीर के ..... केवली शिष्य थे।

३. अन्तःकरण में निरन्तर वैराग्य भाव रहना ..... है।

४. द्रव्य से अहिंसा भाव से हिंसा का उदाहरण ..... है।

५. रूपानुपात ..... व्रत का अतिचार है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अरिहन्त भगवान के बल का वर्णन कीजिए।

२. अन्तर्द्वीप में रहनेवाले मनुष्य की विशेषता लिखिए।

३. सेनापतिरत्न क्या है?

४. देवों का जन्म कैसे होता है?

५. आचार्य कितने प्रकार के हैं और कौन-से?

६. मूलसूत्र की व्याख्या लिखिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. ३३ आशातनाओं में से कोई १० आशातनाएं लिखिए।

२. श्रावक की दसवीं, ग्यारहवीं प्रतिमा को स्पष्ट कीजिए।

३. अवन्दनीय साधु के भेद बताते हुए किन्हीं दो भेद का स्वरूप लिखिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कषाय का स्वरूप, उसके भेद-प्रभेदों को स्पष्ट कीजिए।

२. आठ प्रभावना को विस्तार से समझाइए।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली – भाग १)

प्रश्न ५. अ. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. सत्पुरुषों का नाम लेने से क्या पवित्र हो जाते हैं?

२. कौन ज्ञान के प्रतिनिधि है?

३. धर्मस्थान किसका स्थान नहीं बनना चाहिए?

P.T.O

४. टब्वाओं को क्या कहा जाता था?

५. कौन भ. महावीर के समकक्ष ज्ञानी थे?

ब. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **(५)**

१. ..... की आधारशिला पर ही समग्र साधना की इमारत खडी है।

२. अनिलकुमार तिवारी का जन्म ..... गांव में हुआ।

३. ..... वृक्षों को पानी पिलाये बिना पानी नहीं पीति।

४. ..... लिप्सा आज का सबसे बडा पाप है।

५. करण के ..... प्रकार हैं।

प्रश्न ६. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तंभ		**ब स्तंभ**
१. निर्मलकुमार फडकुले	–	अ. अनुपम प्रवचन शैली
२. नरेन्द्र भानावत	–	आ. जैसलमेर
३. दुलीचन्द जैन	–	इ. अभिनय करना
४. हेमप्रज्ञाजी म. सा.	–	ई. चैन्नई के सचिव
५. थेरूशाह भंसाली	–	उ. प्रभावकारी वक्ता

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. शिक्षाव्रत किसे कहते हैं?

२. निर्युक्ति का अर्थ समझाइए।

३. गणस्थविर के कार्य क्या-क्या हैं?

४. पू. तिलोकऋषिजी म. सा. के काव्यधारा के कौन-कौनसे रूप हैं?

५. डॉ. निर्मलकुमार फडकुले पर किन विचारकों का असर था?

६. निबंध किसे कहते हैं?

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ पर टिप्पणी लिखिए। **(१०)**

१. मान कषाय २. संक्रमण करण ३. परिग्रह

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब दीजिए। **(१०)**

१. शिक्षा के साधक तत्त्व कौन-से हैं?

२. उद्यमी हिंसा के स्वरूप और भेद को स्पष्ट कीजिए।

३. नोकषाय मोहनीय कर्म का बंध कैसे होता है?

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. जप साधना में कैसी शुद्धि रखनी चाहिए।

२. संवर क्या है? उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हम्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **तृतीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – वद्धमाण चरियं)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित हिन्दी अर्थ के लिए प्राकृत शब्द लिखिए। **(५)**

१. तीन ज्ञान से युक्त २. अंगुठियां

३. देहाध्यास से मुक्त ४. सर्वस्पर्श सहनशील

५. स्वाभाविक बुद्धिपूर्वक रूप से

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. तीर्थंकर के जन्म सम्बन्धी कुल विषयक चिंतन किसने किया?

२. बलदेव की माता उनके गर्भ में आनेपर कितने स्वप्न देखती है?

३. भगवान महावीर के जन्म के छट्ठे दिन क्या किया गया?

४. भगवान के मिथिला नगरी में कितने चातुर्मास हुए?

५. हरिणगमेषी देवता किस सेना के अधिपति थे?

प्रश्न क्र. ३. नीचे लिखे परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। **(५)**

समणे भगवं महावीरे दक्खे, दक्खपइन्ने, पडिरूवे आलीणे भद्दए विणीए णाए णायपुत्ते णायकुलचंदे विदेहे विदेहदिन्ने विदेह–जच्चे, विदेह–सुउमाले, तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मा–पिउहिं देवत्त–गएहिं गुरु–महत्तरएहिं अब्भुणुण्णाए समत्त–पइन्ने पुणरवि लोयंतिएहिं जिय–कप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मिय–महुर–सस्सिरीयाहिं हियय–गमणिज्जाहिं हियय–पल्हायणिज्जाहिं गंभीराहिं अपुणरुत्ताहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदमाणा य अभिथुव्वमाणा य एवं वयासी– जय जय णंदा! जय जय भद्दा! भद्दं ते खत्तिय–वर–वसहा! बुज्झाहि भगवं लोगणाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं हिय–सुह–णिस्सेसकरं सव्वलोए सव्वजीवाणं भविस्सइ त्ति कट्टु जय–जय–सद्दं पउंज्जंति।।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१०)**

१. वित्तिच्छेय वज्जंतो तेसिमप्पत्तियं परिहरंतो।
मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घासमेसित्था।।

२. अइवत्तियं अणाउट्टिं, सयमण्णेसिं अकरणयाए।
जस्सित्थिओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से अदक्खु।।

३. सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे।
पडिसेवमाणे फरुसाइं, अचले भगवं रीइत्था।।

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. आश्चर्य किसे कहते हैं? वर्तमान अवसर्पिणी काल के आश्चर्यों का क्रमशः वर्णन कीजिए।

P.T.O

२. 'उवहाण सुयं' के द्वितीय उद्देश्यक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(खण्ड ख – संस्कृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ६. किसी १ विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) (१५)

१. जीवने स्वाध्यायस्य महत्ता।

२. क्षमा वीरस्य भूषणम्।

३. सर्वभूतेषु मैत्री।

प्रश्न क्र. ७. सूचना –अधोलिखितं परिच्छेदं पठित्वा सूचनानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। (१५)

स्थिरता

कस्यापि जीवस्याजीवस्य वा 'स्थिरता' इति नाम नामस्थिरता। स्थिरतानामवान् जीवोऽजीवोऽपि च नामस्थिरता।

स्थिरस्य सिद्धस्य बिन्दुरूपाकारमात्रं असद्भावस्थापना–स्थिरता। स्थिरस्य सिद्धस्य स्पष्टाकारः सद्भावस्थापना–स्थिरता।

द्रव्यस्थिरता द्विविधा–आगमतो नो–आगमतश्च। तत्र स्थिरतापदार्थस्य ज्ञाता, तत्रानुपयोगवान् जीव आगमतो द्रव्यस्थिरता। नो–आगमतो द्रव्यस्थिरता त्रिविधा–ज्ञशरीरभव्यशरीरतद्व्यतिरिक्तभेदात्। तत्र स्थिरतापदार्थज्ञातुः मृतकशरीरं ज्ञशरीरम्। य आगामिनि काले स्थिरतापदार्थं ज्ञास्यति, तस्याधुनातनं शरीरं भव्यशरीरम्।

तद्व्यतिरिक्ता द्रव्यस्थिरता त्वियम् य आत्मगुणेषु उपयोगवान् नास्ति, केवलं प्राणायामादिषु स्थिरोऽस्ति, कायोत्सर्गे वा स्थिरोऽस्ति, स तद्व्यतिरिक्तद्रव्यस्थिरता। एवं द्रव्यतः स्थिरता मनोवाक्काययोगनिरोधरूपा। द्रव्ये स्थिरता धने मम्मणस्थिरता।

द्रव्येण स्थिरता रोगादिना शरीरजडताभवनरूपा।

अधुना भावतः स्थिरता। सा द्विविधा–आगमतो नोआगमतश्च। तत्र स्थिरतापदार्थज्ञाता, तत्रोपयुक्तश्चागमतो भावस्थिरता। अधुना नोआगमतो भावस्थिरता प्रतिपाद्यते। सा द्विविधा शुद्धा अशुद्धा च।

तत्र मनोज्ञविषयेषु रागस्वरूपा या तन्मयता, साऽशुद्धस्थिरता। एवं अमनोज्ञविषयेषु द्वेषस्वरूपा या तन्मयता, साऽशुद्धस्थिरता। या तु सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिस्वरूपे तन्मयता, सा शुद्धस्थिरता। एवं धर्मध्यानशुक्लध्यानादिषु अचलता, सा शुद्धस्थिरता।

अधुना नयैर्विचारणं क्रियते।

तत्र मोक्षरूपेण शुद्धसाध्येन शून्याभव्यादीनां योगादिस्थिरता, सा दुर्नयरूपा स्थिरता। एवं 'मोक्षः साधनीयः' इत्यादिवार्त्तत्या या योगादिस्थिरता आद्रियते, याधुना जैनाभासैः प्रभूतैः क्रियते, साऽपि दुर्नयरूपा नयाभासरूपा वा स्थिरता।

या तु मोक्षाभिलाषेण मोक्षानुकूलप्रयत्नेन च मनोवाक्कायैर्हिसादीनां त्यागरूपा स्थिरता आद्रियते, सा नैगम–सङ्ग्रह–व्यवहार– ऋजुसूत्र– नयानुसारेण ज्ञेया।

या तु सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेण हिंसादित्यागस्वरूपेण आत्मगुणसाधनाभ्यासवती स्थिरता, सा शब्दनयस्थिरता ।

या तु धर्मध्याने शुक्लध्याने वा स्वरूपादप्रच्युतिरूपा स्थिरता, सा समभिरूढस्थिरता।

P.T.O

या तु क्षायिकदर्शनज्ञानचारित्रवीर्यसुखादिभ्योऽप्रच्युतिरूपा स्थिरता, सा एवम्भूतस्थिरता। आद्यनयचतुष्टयाभिमता स्थिरता षष्ठगुणस्थानसम्भविनी शुद्धव्यवहारपालनरूपा ज्ञेया। या तु तत्रैव शुद्धव्यवहारपालनेनात्मगुणानुभवरूपा स्थिरता, सा शब्दनयस्थिरता।

या उपशमश्रेणीगते धर्मध्याने क्षपकश्रेणीगते शुक्लध्याने वा स्थिरता, सा समभिरूढस्थिरता। या सिद्धेषु स्थिरता, सा एवम्भूतनयस्थिरता।

अत्र तु परमानन्दसन्दोहभोगरूपं यत् सिद्धत्वम्, तस्य साधनीभूता या आत्मगुणेषु क्षमादिस्वभावेषु स्थिरता, तस्या व्याख्यानं कृतम्।

सूचना – व्याकरणानुसारेण उत्तराणि लिखेयुः। **(५)**

१. 'आद्रियते' अस्मिन् पदे कः उपसर्गः, कः धातुः, कः प्रत्ययः च अस्ति?

२. 'स्थिरतापदार्थज्ञातुः' अस्य पदस्य विभक्तिः, वचनं च किम्?

३. 'ज्ञाता' अस्मिन् पदे मूलशब्दः कः, तस्य लिङ्गं च किम्?

४. 'मनोवाक्कायै' अस्मिन् पदे कः समासः अस्ति?

५. 'तन्मयता' एतत् पदं केन प्रत्ययेन निर्मितं?

सूचना – निम्नलिखितपदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनामं लिखेयुः। **(५)**

१. तत्रोपयुक्तश्चागमतो　　२. मोक्षानुकूलप्रयत्नेन　　३. स्थिरोऽस्ति

४. नयैर्विचारणम्　　५. त्वियम्

सूचना – स्थिरतायाः नामानि लिखेयुः। **(५)**

१. धर्मध्याने शुक्लध्याने वा स्वरूपादप्रच्युतिरूपा –

२. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिस्वरूपे तन्मयता –

३. जीवस्याजीवस्य वा स्थिरता इति नाम –

४. आत्मगुणेषु उपयोगवान् नास्ति –

५. क्षपकश्रेणीगते शुक्लध्याने –

(खण्ड ग – प्राकृत निबन्ध)

प्रश्न क्र. ८. किसी १ विषय पर प्राकृत में निबन्ध लिखिए। (शब्द मर्यादा–१५० से २००) **(१५)**

१. पुरिसा तुममेव तुमं मित्तं।

२. नाणस्स सारं विरई।

३. भगवओ महावीरो।

प्रश्न क्र.९. सूयणा – अहोलिहिअं कहाणयं पढिऊण पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(१५)**

अवंतीए पुरीए इंददत्तो नाम सिप्पिवरो अहेसि, सो सिप्पकलाहिं सव्वंमि जयंमि पसिद्धो होत्था। इमस्स सरिच्छो अन्नो को वि नत्थि। एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम। सो पिउस्स सगासम्मि सिप्पकलं सिक्खंतो कमेण पिउराओ वि अईव सिप्पकलाकुसलो जाओ। सोमदत्तो जाओ जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिया कंपि भुल्लं दंसेइ, कया वि सिलाहं न कुणेइ। तओ सो सुहुमदिद्ठिए सुहुमसुहुमं सिप्पकिरियं कुणेऊण पियरं दंसेइ, पिया वि तत्थ वि कंपि खलणं दरिसेइ, तुमए सोहणयरं सिप्पं कयं त्ति न कयाइ तं पसंसेइ। अपसंसमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ मम पिआ मज्झ कयं कहं न पसंसेज्जा? तओ एआरिसं उवायं करेमि, जेण पियरो मे कयं पसंसेज्ज।

P.T.O

एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण, पडिमाए हेट्ठंमि गूढं नियनामंकियचिन्हं करिऊण, तं मुत्तिं नियमित्ता भूमीए अंतो निक्खेव कारेइ। कालंतरे गामंतराओ पिया समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए गणेसस्स पहावसालिणी पडिमा अत्थि। तया लोगेहिं सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए गणेसस्स सुंदरयमा अणुवमा मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवे लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठुणं पुत्तं कहेइ हे पुत्त ! एसच्चिअ सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।

पुत्तो वि कहेइ 'हे पियर ! एसा गणेसपडिमा मम कया। इमाए हेट्ठंमि गुत्तं मए नामंपि लिहिअमत्थि। 'पिआवि लिहिअनामं वाइऊण खिज्जहियओ पुत्त! अज्जयणाओ तुं एरिसं सिप्पकलाजुत्तं सुंदरयमं पडिमं कया वि न करिस्ससि, जओ हं तव सिप्पकलासु भुल्लं दंसतो, तया तुमं पि सोहणयरकज्जकरणतच्छिलो सण्हं सण्हं सिप्पं कुणंतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढती हुवीअ। अहुणा मम सारिच्छो नन्नो इह मंदूसाहेण तुम्ह एआरसी सिप्पकला न संभविहिइ। एवं सो सरहस्सं पिउवयणं सोच्चा पाएसु पडिऊण पिउत्तो पसंसाकरावणरूव नियावराहं खामेइ, परंतु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसिं सिप्पकलं काउं असमत्थो जाओ।

सूयणा – एगे सद्दे पण्हाणां उत्तराणि लिहउ। **(५)**

१. सोमदत्तो कस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण भूमीए अंतो निक्खेवइ?
२. पिया कयावि पुत्तस्स सिप्पकलं दट्ठुं किं न कुणेइ?
३. सोमदत्तो तयानंतरं किं काउं असमत्थो जाओ?
४. इंददत्तस्स पुत्तस्स नाम किं अहेसि?
५. सोमदत्तस्स अवराहं किं अहेसि?

सूयणा – अस्स कए कहाणगम्मि को सद्दों अत्थि, लिहउ। **(५)**

१. अन्य गांव २. रहस्ययुक्त ३. निर्माणकर्ता
४. समान ५. पढकर

सूयणा – संधि–विच्छेयं कुणउ। **(५)**

१. जणाणमग्गओ
२. नियावराहं
३. मंदूसाहेण
४. को वि
५. नन्नो

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

प्रज्ञापना सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित संस्थान किस इन्द्रिय का है, बताइए। **(५)**

१. नाना प्रकार २. अतिमुक्तकपुष्प ३. मसूर–चन्द्र
४. कदम्ब पुष्प ५. खुरपा

ब. निम्नलिखित पद कितवां पद है, बताइए। **(५)**

१. सम्यक्त्व पद २. उपयोग पद ३. उच्छ्वास पद
४. प्रविचारणा पद ५. परिणाम पद

क. निम्नलिखित वचनों का कोई १ उदाहरण लिखिए। **(५)**

१. प्रत्यक्ष वचन २. प्रत्युत्पन्न वचन ३. उपनीत वचन
४. अनागत वचन ५. अपनीत वचन

ड. निम्नलिखित बात किस लेश्या से संबंधित है, बताइए। **(५)**

१. हाथी का बच्चा २. श्रृंगबेर का चूर्ण ३. शरद ऋतु का बादल
४. सुपक्व इक्षुरस ५. पारिजात का फूल

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. अभिगम रुचि २. योनि ३. उपचय
४. समुद्घात ५. आभोगनिर्वर्तित क्रोध ६. अभिगृहिता भाषा

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ कर्मों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति लिखिए। **(१०)**

१. साता वेदनीय कर्म २. पुरुष वेद ३. नाराच संहनन नाम कर्म
४. अप्रशस्त स्पर्श नाम कर्म ५. अपर्याप्त नाम कर्म ६. संज्वलन क्रोध

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. अवधि पद के आधार से विभिन्न जीवों की अवधिज्ञान से जानने–देखने की क्षेत्रमर्यादा का निरूपण कीजिए।

२. आहार पद के आधार से निम्न द्वारों के माध्यम से आहार का निरूपण कीजिए।

अ. संज्ञी ब. लेश्या क. वेद

३. वैक्रिय शरीरी जीवों की शरीर अवगाहना का प्रतिपादन कीजिए।

४. भव्य–द्रव्य देव के उपपात का वर्णन विस्तार से कीजिए।

५. चार गति में आहारादि चार संज्ञाओं की अपेक्षा से अल्पबहुत्व की प्ररूपणा कीजिए।

६. वैक्रिय के १४ दण्डकों के उपपात के विरहकाल को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O

७. वनस्पतिकायिक जीवों की प्रज्ञापना संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. निम्न द्वारों में कायस्थिति को स्पष्ट कीजिए।

अ. ज्ञान ब. योग क. इन्द्रिय ड. सूक्ष्म

२. विहायोगति किसे कहते हैं ? उसके सभी प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. क्रियापद का निरूपण अपनी भाषा में लिखिए।

२. नैरयिकों के अनन्त पर्यायों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – योगदर्शन तथा योगविंशिका)

प्रश्न १. अ. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। **(५)**

१. योगसूत्रों की कुलसंख्या ..... हैं। (१९५, १९६, १९७)

२. योग का ग्रन्थराज ..... है। (योगशतक, योग विंशिका, योगवाशिष्ट)

३. ..... साहित्य में हठयोग को स्थान नहीं मिला। (वैदिक, सांख्य, बौद्ध)

४. आठवें से बारहवें गुणस्थान तक ..... ध्यान के दो भेद पाये जाते हैं। (धर्म, शुक्ल, शुद्ध)

५. विपाक ..... प्रकार के हैं। (तीन, चार, पांच)

ब. जोड लगाइए। **(५)**

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. मनोविभ्रम।	–	अ. तद्हेतु अनुष्ठान
२. जपरूप अध्यात्म	–	ब. कायगुप्तिरूप विरति
३. विलंब से मोक्ष देनेवाला	–	क. विघ्न
४. कायोत्सर्ग	–	ड. सालम्बन
५. ध्यान का भेद	–	इ. ऊर्णयोग

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. योग की जरूरत क्यों है?

२. योग के पहले और बाद में होनेवाला ज्ञान कैसा होता है?

३. हठयोग का स्वरूप समझाइए।

४ जैन योग साहित्य के प्रसिद्ध ग्रंथों के नाम लिखिए।

५. उपाध्याय यशोविजयजी की विवेचना में क्या नजर आती है?

६. भक्ति अनुष्ठान का स्वरूप समझाइए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सूत्रों/गाथाओं का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए। **(१५)**

१. सदा ज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभोः पुरुषस्यापरिणामित्वात्।

२. सत्त्व पुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति।

३. दुःखमेव सर्वं विवेकिनः।

४. ठाणुन्नत्थालंबण – रहिओ तंतम्मि पंचहा एसो।
दुगमित्थ कम्मजोगो, तहा तियं नाणजोगो उ।।

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. योगशास्त्र में वर्णित विषयों का वर्णन कीजिए।

२. योगशास्त्र के प्रथमपाद का वर्णन कीजिए।

(खण्ड ख – ध्यानशतक)

प्रश्न ५. अ. सही है या गलत, बताइए। **(५)**

१. दुःख का कारण रौद्रध्यान है।

२. वीतराग के सम्बन्ध में काय की निश्चलता को ध्यान कहा है।

३. धर्मध्यान मान छूटने से ही सम्भव है।

४. ग्रंथकार ने शुद्धि के तीन उपाय बताये हैं।

५. विलाप करना रौद्रध्यान का लक्षण है।

ब. एक शब्द में जवाब दीजिए। **(५)**

१. क्या किसी को भी प्रिय नहीं है?

२. वीतराग की आज्ञा कैसी आज्ञा है?

३. अनंत में विचरण करना कौन-सी अनुप्रेक्षा है?

४. मैत्री आदि की भावना से क्या उत्पन्न होता है?

५. ग्रन्थों की क्या होती है?

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. ध्यान करने के लिए कौन-सा स्थान उपयुक्त है?

२. संस्थान विचय धर्मध्यान का स्वरूप समझाइए।

३. मन के निरोध की प्रक्रिया बताइए।

४. छद्मस्थ का ध्यान अन्तर्मुहूर्त का ही क्यों?

५. धर्मकथा क्या है, स्पष्ट कीजिए।

६. ध्यान और कायोत्सर्ग में क्या अन्तर है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब दीजिए। **(१५)**

१. बत्तीस योग में से किन्हीं पांच योगों का वर्णन कीजिए।

२. संप्रज्ञानी कौन होता है?

३. ध्यान के भेद बताते हुए किस ध्यान से कौन-सा फल मिलता है?

४. हिंसानुबंधी रौद्रध्यान का स्वरूप बताइए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब दीजिए। **(१५)**

१. कौन-सी भावनाएं ध्यान में सहायक बनती हैं, स्पष्ट कीजिए।

२. धीर मुनि को किन-किन लक्षणों से पहचाना जा सकता है?

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

सूत्रकृतांग सूत्र

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित कौन–सी बातों से प्राणी नरक में जाते हैं, बताइए। **(५)**

१. जो बाल है।
२. जीवितार्थ पुण्य कर्म करते हैं।
३. जो मूढ हर समय घात में लगा रहता है।
४. जो रौद्र है।
५. जो लूटमार करता है।
६. जो संयत का हमेशा अभ्यास करता है।
७. जो बहुत–से प्राणियों का वध करता है।

ब. निम्नलिखित मान्यता किसकी है, लिखिए। **(५)**

१. आत्मा को सर्वव्यापक होने के कारण अक्रिय मानता है।
२. उपचार से आत्मा में बद्ध और मुक्त का व्यवहार करता है।
३. महेश्वर ही चराचर सृष्टि का निर्माण तथा संहार करते हैं।
४. आत्मा द्रव्य दृष्टि से नित्य होते हुए भी पर्याय दृष्टि से कथंचित् अनित्य है।
५. जगत् में सब कुछ ब्रह्मरूप है।

क. निम्नलिखित चारित्र शुद्धि के विवेक सूत्र पूर्ण कीजिए। **(५)**

१. दस प्रकार की ..... में स्थित रहे।
२. सदा पंच ..... से युक्त रहे।
३. मन–वचन–काया ..... में मुनि सतत संयत रहे।
४. चार ..... का परित्याग करे।
५. पंच ..... रूप संवरों से युक्त रहे।

ड. निम्नलिखित क्रियास्थान का कोई एक उदाहरण लिखिए। **(५)**

१. अर्थदण्डप्रत्ययिक
२. अकस्माद् दण्डप्रत्ययिक
३. लोभप्रत्ययिक
४. अध्यात्मप्रत्ययिक
५. मित्रदोषप्रत्ययिक

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. धम्मं कहेंतस्स उ णत्थि दोसो, खंतस्स दंतस्स जितेंदियस्स।
भासाय दोसे य विवज्जगस्स, गुणे य भासाय णिसेवगस्स।।

२. आघं मइमं अणुवीति धम्मं, अंजू समाहिं तमिणं सुणेह।
अपडिण्णे भिक्खू तु समाहिपत्ते, अणियाणभूते सुपरिव्वएज्जा।।

३. ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
निव्वाण सेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी।।

P.T.O

४. इहमेगे उ भासंति, सातं सातेण विज्जती।
ते तत्थ आरियं मग्गं, परमं च समाहियं।।

५. गारं पि य आवसे नरे, अणुपुव्वं पाणेहिं संजए।
समया सव्वत्थ सुव्वए, देवाणं गच्छे स लोगयं।।

६. समिते उ सदा साहु, पंचसंवरसंवुडे।
सितेहिं असिते भिक्खू, आमोक्खाए परिवएज्जासि।।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षिप्त में लिखिए। **(१०)**

१. कौन पश्चाताप करता है और कौन नहीं करता?

२. उपसर्ग से पीडित साधकों की अवदशा को कौन-से दृष्टान्तों द्वारा प्रतिपादित किया है?

३. परिषह और उपसर्ग सहने के सहज उपाय कौन-से हैं?

४. मद त्याग के विविध पहलू कौन-से हैं?

५. श्रमण धर्म का पालन कैसे करे?

६. भगवान महावीर भय एवं राग-द्वेष से मुक्त है, इसका आर्द्रकमुनि ने किस प्रकार समाधान किया?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. नरक के दु:खों से बचने के उपाय कौन कौन-से हैं?

२. भगवान महावीर की विशिष्ट उपब्धियों पर प्रकाश डालिए।

३. सचित जल-शौच से मोक्ष प्राप्त होता है, इस मान्यता का निराकरण कीजिए।

४. वीर्य अध्ययन का सार संक्षिप्त में लिखिए।

५. अहिंसा के विविध मार्ग का विस्तृत वर्णन कीजिए।

६. भिक्षावृत्ति के लिए समुद्यत भिक्षु के लिए वैराग्योत्पादक परिज्ञानसूत्र कौन-से हैं?

७. श्रमणोपासक के प्रत्याख्यानों का उल्लेख करके उस प्रत्याख्यान की कहां-कहां सविषयता है, बताइए।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. ग्रन्थ के आधार से एकलविहारी मुनि की आचार संहिता पर प्रकाश डालिए।

२. प्रत्याख्यान क्रिया अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. बत्तीस आगमों में सूत्रकृतांग सूत्र के स्थान और महत्त्व का अपनी भाषा में निरूपण कीजिए।

२. ग्रन्थ के आधार से आत्मषष्ठवाद का विस्तृत वर्णन करके उसकी मान्यता का निराकरण कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

शास्त्रवार्ता समुच्चय

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित सवालों के अंकों में जवाब लिखिए। **(५)**

१. बौद्धों के अनुसार बाह्य पदार्थ कितनी इन्द्रियों से जाने जा सकते हैं?

२. शैलेशी अवस्था में कितने वर्णों का उच्चारण किया जा सकता है?

३. मीमांसकों ने प्रमाण के कितने प्रकार माने हैं?

४. 'पूर्त्त' के अंतर्गत कितनी बातें बतायी है?

५. कितनी बातें पाप का कारण बनती है?

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में लिखिए। **(५)**

१. एक वस्तु अपने स्वरूप आदि की दृष्टि से पहले की अपेक्षा अभिन्न किसके आधार पर मानी जाती है?

२. कार्य–कारणतावाद और कर्मवाद के बीच समन्वय स्थापित करने का मत किसका है?

३. बुद्ध ने बाह्य वस्तुओं में आसक्ति नष्ट हो इसलिए किसको वास्तविक सत्ता कहा है?

४. केवल ज्ञान और उत्कृष्ट प्रकार की क्रियाविशेष की उपस्थिति में क्या होती है?

५. चेतना किस तत्त्व से संबंधित है?

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित बातों के कारण को लिखिए। **(५)**

१. वस्तुनाश विषयक निश्चय न होने का कारण

२. संसार रूपी अंकुर की उत्पत्ति का कारण

३. कर्मबंध का निमित्तकारण

४. मोक्ष प्राप्ति का कारण

५. संसार का कारण

प्रश्न क्र. ४. ये कौन हैं, बताइए। **(५)**

१. जगत् की घटनाओं का असाधारण कारण

२. अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार के भौतिक पदार्थ

३. न करने योग्य कामों को करना

४. ज्ञाता की तत्कालीन मनःस्थिति

५. वनवासी द्वारा रचित

प्रश्न क्र. ५.निम्नलिखित किन्ही ५ सवालों के संक्षेप में जवाब दीजिए। **(१०)**

१. भयानक संसार सागर कितने उपद्रवों वाला बताया है? कौन–से?

२. जगत् की घटनाओं के असाधारण कारण कितने और कौन–से?

P.T.O

३. सभी फलों की प्राप्ति किसके उपस्थित होनेपर ही होती है?

४. संसार में किसका बोलबाला है और उसका फल क्या है?

५. जगत् की प्रत्येक वस्तु कितने रूपोंवाली है? कौन-से?

६. अदृष्ट के पर्यायवाची शब्द कितने हैं और कौन-से?

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ पदों की परिभाषा लिखिए। **(१०)**

१. असत्कार्यवाद २. निमित्त कारण ३. ज्ञानयोग

४. सामान्य ५. संसार ६. द्रव्य

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब ग्रंथ के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए। **(३०)**

१. धर्म का द्विविध विभाजन किस-किस परंपरा में कैसे किया गया है, स्पष्ट कीजिए।

२. शून्यतासमर्थक प्रमाण को स्वीकार करे तो उनकी मान्यता कैसे खंडित होती है?

३. एक वस्तु की सत्ता में दूसरे वस्तु की सत्ता है या नहीं सयुक्तिक सिद्ध कीजिए।

४. हिंसा धर्म का कारण है यह बात सही है या गलत सिद्ध कीजिए।

५. अभाव किसी प्रमाण का विषय है या नहीं स्पष्ट कीजिए।

६. मनुष्य को क्रिया फल दिलाती है या ज्ञान सयुक्तिक लिखिए।

७. ग्रंथिभेद भवी आत्मा करती है या अभवी, स्पष्ट कीजिए।

८. प्रत्यभिज्ञा का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न क्र. ८. किसी १ सवाल का जबाब सयुक्तिक लिखिए। **(१५)**

१. ब्रह्माद्वैतवादी की मान्यता का खंडन करके जैन दर्शन की मान्यता लिखिए।

२. विज्ञानवादी कौन है? उनकी मान्यता सही है या गलत सिद्ध कीजिए।

प्रश्न क्र. ९. किसी १ सवाल का जवाब अपनी भाषा में लिखिए। **(१५)**

१. क्षणिकवाद की मान्यता वाले बौद्धों का दार्शनिक विवेचन कीजिए।

२. मोक्ष के साधन और उसका स्वरूप अपने शब्दों में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

अनुयोगद्वार सूत्र

प्रश्न १. निम्नलिखित बातों को कौन–से अंगुल से नापा जाता है, लिखिए। **(५)**

१. पुष्करिणी २. वर्षधर पर्वत ३. देवों के शरीर

४. शकट ५. पाताल कलश

प्रश्न २. निम्नलिखित समूह में से अनुचित पद अलग कीजिए। **(५)**

१. विशाखा, चित्रा, हस्त, मार्गशीर्ष

२. मनुष्य, स्त्रीवेद, कृष्णलेश्या, औदारिक शरीर

३. विशोधि, श्रुत, मार्ग, न्याय

४. घोडमुहं, कणगसत्तरी, करणसत्तरी, नागसुहुमं

५. उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, आय

प्रश्न ३. निम्नलिखित उत्कृष्ट स्थिति किसकी है, लिखिए। **(५)**

१. १० हजार वर्ष २. ६ मास ३. ७२ हजार वर्ष

४. १० सागरोपम ५. ९ पल्योपम

प्रश्न ४. निम्नलिखित उदाहरण किसका है, लिखिए। **(५)**

जैसे – गिरिनगर : समीपनाम

१. श्री २. देवदत्त ३. मधूदकं

४. अशोक वन ५. इक्ष्वाकु

प्रश्न ५. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. ज्ञायक शरीर २. शासन ३. क्षायिक भाव ४. प्रसिद्धि

प्रश्न ५. ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का भावार्थ लिखिए। **(४)**

१. अज्झप्पस्साऽऽणयाणं, कम्माणं अवचओ उवचियाणं।
अणुवचओ य नवाणं, तम्हा अज्झयणमिच्छंति।।

२. कोहे माणे माया लोभे रागे य मोहणिज्जे य।
पगडी भावे जीवे जीवत्थिय सव्वदव्वा य।।

३. समणेण सावएण य अवस्सकायव्वयं हवति जम्हा।
अंतो अहो–निसिस्स उ तम्हा आवस्सयं नाम।।

P.T.O

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ के प्रकार लिखिए। **(१०)**

१. कीटज सूत्र २. चतुर्नाम ३. पल्योपम
४. नोआगम भाव आवश्यक ५. शेषवत् अनुमान ६. निक्षेप

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. आय के स्वरूप का निरूपण कीजिए।
२. समय के समूह रूप काल विभागों का वर्णन कीजिए।
३. आवश्यक के अर्थाधिकार और अध्ययन पर प्रकाश डालिए।
४. तिर्यंच और मनुष्य गति की अवगाहना का प्रतिपादन कीजिए।
५. उपोद्घात निर्युक्त्यनुगम करने सम्बन्धी कितने और कौन-से प्रश्न है? उनमें से किन्हीं ३ प्रश्नों को सोदाहरण समझाइए।
६. गुणनाम किसका भेद है? उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
७. अनुगम के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तृत जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सामायिक भाव प्रमाण के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
२. सप्तनाम के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ९. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. संख्या प्रमाण का निरूपण कीजिए।
२. नय का निरूपण करके नय वर्णन से क्या लाभ होता है, समझाइए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

भगवती सूत्र – शतक १ से १४

प्रश्न १. एक शब्द में जबाब लिखिए। (५)

१. अवगाहना का अर्थ क्या है?
२. ऋषिभद्रपुत्र कौन-से विमान में उत्पन्न होंगे?
३. मुद्गल परिव्राजक किस नगरी का था?
४. क्रोध की परम्परा को क्या कहते हैं?
५. कार्मणशरीर चतुस्पर्शी है या अष्टस्पर्शी?

प्रश्न २. अंकों में जबाब लिखिए। (५)

१. देवों की अपेक्षा देवियां कितने गुणा अधिक हैं?
२. जम्बुद्वीप में सूर्य कितने योजन ऊंचे क्षेत्र को तप्त करते हैं?
३. गंगा नदी की कितनी सहायक नदियां हैं?
४. शिखरी पर्वत की चारों विदिशाओं में कितने अन्तर्द्वीप हैं?
५. सुप्रत्याख्यानी, दुष्प्रत्याख्यानी का वर्णन कौन-से शतक में हैं?

प्रश्न ३. उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (५)

१. संक्रमण ..... प्रकृतियों में नहीं होता है। (मूल, उत्तर, मूल-उत्तर)
२. ज्योतिष्कों में ..... लेश्या होती हैं। (तेजो, पद्म, शुक्ल)
३. भाषा का मूल कारण ..... है। (शरीर, मुंह, जीव)
४. भयंकर स्थानों में नारकों को पटकने एवं पीटनेवाले ..... देव। (रुद्र, शबल, श्याम)
५. स्थिर स्वभाव और समता के कारण को ..... कहते हैं। (समिका, शमिका, समिता)

प्रश्न ४. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ	**'ब' स्तंभ**
१. पांचवां अंगसूत्र	अ. अर्धमागधी भाषा
२. कृष्णलेश्या का रस	आ. अनुतटिका
३. गांधीजी का प्रथम सत्याग्रह	इ. व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र
४. देवों की भाषा	ई. चम्पारन
५. पुद्गल का भेद	उ. तिक्त

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ की परिभाषा लिखिए। (१०)

१. औदारिक पुद्गल परिवर्त २. कार्मण काययोग ३. कान्दर्पिक

P.T.O

४. मारणान्तिक समुद्घात ५. स्वपर्याय ६. समयक्षेत्र

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। **(१०)**

१. जृम्भक देवों का निवासस्थान और स्थिति लिखिए।

२. धर्मास्तिकायादि त्रिक पर कोई व्यक्ति बैठने, सोने और ठहरने में समर्थ क्यों नहीं हैं?

३. तमस्काय के कितने नाम हैं? कौन-कौनसे?

४. ज्ञानावरणीय कर्म में किस-किस कर्म की नियमा और भजना है?

५. नारकियों का उत्तरवैक्रिय शरीर हुण्डक संस्थानवाला क्यों है?

६. मायी अणगार विकुर्वणा क्यों करता है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(३०)**

१. वेदोदय काम ज्वर से उन्मत्त जीव की दशाओं का वर्णन कीजिए।

२. जीव मोहनीय कर्म के उदय से उपस्थान और अपक्रमण क्रिया करता हैं या नहीं?

३. लोकान्तिक देव और उनके विमानों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

४. पंचविध देवों का अंतरकाल कितना है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

५. २२ परिषह में किन-किन कर्मों में समवतार होता है, लिखिए।

६. नारकी जीवों की जघन्य, उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

७. प्रत्यनीक की व्याख्या और श्रुतप्रत्यनीक के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब विस्तार से लिखिए। **(३०)**

१. तुल्य के भेदों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

२. बंध के भेद-प्रभेदों को विस्तार से बताइए।

३. भिक्षु प्रतिमा की आराधना कैसे की जाती है, स्पष्ट कीजिए।

४. जयंती श्राविका द्वारा पूछे गए किन्हीं पांच सवालों को स्पष्ट कीजिए।

॥ ॐ अर्हन्॥

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – सन्मति तर्क प्रकरण)

प्रश्न १. उचित पर्याय को चुनकर लिखिए। (५)

१. कपिल का दर्शन ..... का वक्तव्य है। (द्रव्यास्तिक, पर्यायास्तिक, उभयास्तिक)

२. प्रयत्नजन्य उत्पाद ..... नाम से प्रसिद्ध है। (परमाणुवाद, अभिसन्धिज, समुदायवाद)

३. सात प्रकार की वाक्य रचना ..... कहलाती है। (सातभंगी, सप्तभंगी, साठभंगी)

४. निरपेक्ष भाव से प्रवृत्ति ही नयों के ..... का बीज है। (सुनयत्व, दुर्नयत्व, सुःदुर्नयत्व)

५. कार्य की उत्पत्ति ..... से होती है। (काल, ऋतु, कारण)

प्रश्न २. जोड लगाइए। (५)

'अ' स्तंभ		**'ब' स्तंभ**
१. शंकराचार्य	–	अ. विक्षेपवादी
२. धर्मकीर्ति	–	ब. माध्यमिक दर्शन के दूत
३. संजयवेलट्ठिपुत्त	–	क. वेदान्त के आचार्य
४. नागार्जुन	–	ड. अनेकान्तवादी
५. भ. महावीर	–	इ. बौद्ध के आचार्य

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१०)

१. समभिरूढ नय की परिभाषा लिखिए।

२. आत्मा की दो शक्तियों के नाम और उसकी परिभाषा लिखिए।

३. जैन सिद्धांत प्ररूपणा के अधिकारी कौन है?

४. क्या जीव केवल रूप हैं, संक्षेप में लिखिए।

५. कुन्दकुन्द की कृतियों की तुलना कितने भागों में की जाती है कौन-सी?

६. श्रुतज्ञान की तरह श्रुतदर्शन क्यों नहीं है?

प्रश्न ४. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। (१५)

१. आत्मा के विषय में मिथ्याज्ञान और यथार्थ ज्ञान के स्थान कितने और कौन-से?

२. जीव और पुद्गल में भेदाभेद का समर्थन कैसे कर सकते हैं?

३. चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन के बारे में क्या मान्यताएं हैं?

४. ग्रन्थकार ने ग्रंथ की रचना किस उद्देश्य से की है?

प्रश्न ५. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. जन्यद्रव्य की उत्पत्ति में कौन-सी तीन प्रक्रियाएं हैं?

P.T.O

२.निम्नलिखित गाथाओं का संसदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

अ. पडिपुण्णजोव्वणगुणो जह लज्जइ बालभावचरिएण।
कुणइ य गुणपणिहाणं अणागयसुहोवहाणत्थं।।

ब. केइ भणंति 'जइया जाणइ तइया ण पासइ जिणोत्ति।
सुत्तमवलम्बमाणा तित्थयरासायणा भीरु।।

(खण्ड ख – जैन निबंधावली भाग २)

प्रश्न ६. निम्नलिखित सवालों के जवाब एक शब्द में दीजिए। (५)

१. आत्मारामजी म. सा. का मौलिक साहित्य किसका नेतृत्व करता है?
२. अल्बर्ट आइन्स्टीन के अनुसार हम कौन-सा सत्य जानते हैं?
३. गॅलिलिओ को किसमें खड़ा किया?
४. मुनि नथमलजी ने कहां दीक्षा ली?
५. मोहम्मद पैगम्बर ने किसकी हालत देखी?

प्रश्न ७. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। (५)

१. मल्लवादी ने ..... ग्रंथ की रचना की। (नयचक्र, प्रमाण चक्र, तर्कचक्र)
२. ..... परिवर्तित होती है। (द्रव्य, गुण, पर्याय)
३. योगवशिष्ट ने अज्ञान की ..... भूमिकाएं कही हैं। (५, ६, ७)
४. सब आवरणों में ..... का आवरण प्रधान है। (मोह, कर्म, ज्ञान)
५. वर्तमान भव में मृत्यु का वरण करना ..... मरण है। (बाल, तद्भव, अवधि)

प्रश्न ८. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब संक्षेप में लिखिए। (१०)

१. अणुव्रत और महाव्रत को समझाइए।
२. हिम्मतसिंह सरूपरिया की विशेषताएं लिखिए।
३. वानप्रस्थी महाप्रस्थान में क्या करता है?
४. ब्रह्मचारी के आहार संबंधी ४ नियम लिखिए।
५. पुण्यविजयजी म. सा. का साहित्य क्षेत्र में क्या योगदान रहा?
६. विश्व क्या है?

प्रश्न ९. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। (१५)

१. आकृति और सद्गुणों पर एकाग्रता कैसे की जा सकती है?
२. जैनदर्शन में ईश्वर स्मरण क्यों किया जाता है?
३. संलेखना कब करनी चाहिए और उसके अतिचार बताइए।
४. नव्यन्याय युग का वर्णन कीजिए।

प्रश्न १०. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। (१५)

१. रंगों के गुण-दोष लिखिए।
२. १४ गुणस्थानों में से किन्हीं ७ गुणस्थान के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्ताचार्य परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे चतुर्थ पत्रम्**

सन् २०२४ **समय: घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

विशेषावश्यकभाष्य

प्रश्न १. निम्नलिखित नयों के अभिप्राय से सामायिक कब होती है, बताइए। **(५)**

१. ऋजुसूत्र नय २. नैगम नय ३. समभिरूढ नय

४. व्यवहार नय ५. शब्द नय

प्रश्न २. निम्नलिखित लब्धि कौन–सी है, पहचानिए। **(५)**

१. हाथादि के स्पर्शमात्र से रोग दूर होना।

२. सभी इन्द्रियां परस्पर एकरूपता को प्राप्त होना।

३. सभी अवयव सुवासित और रोग दूर करने में समर्थ होना।

४. घट–पट आदि के विचारों को सामान्य मात्र से ग्रहण करनेवाली मति प्राप्त होना।

५. यथाविधि अतिशयपूर्वक निरन्तर बेले की तपस्या करने से उत्पन्न होनेवाली लब्धि।

प्रश्न ३. अ. निम्नलिखित समूह में से अनुचित पद को अलग कीजिए। **(५)**

१. श्रुत, ग्रंथ, आज्ञा, उपयोग

२. गण, प्ररूपणा, वर्ग, संघात

३. उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, ज्ञेय

४. श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यव ज्ञान, केवलज्ञान

५. आषाढाचार्य, तिष्यगुप्त, अश्वमित्र, गोष्ठामाहिल

ब. निम्नलिखित को मतिज्ञान प्राप्त होता है, नहीं होता है या भजना है, बताइए। **(५)**

१. अतीन्द्रिय २. पंचेन्द्रिय ३. अभव्य

४. मिश्रदृष्टि ५. त्रसकाय

प्रश्न ४. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. तथाकार २. इच्छाकार ३. निमंत्रणा

४. मिथ्याकार

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. ओराल–विउव्वा–हार–तेय–भासा–णुपाण–मण–कम्मे।
अह दव्ववग्गाणं कमो विवज्जासओ खेत्ते।।

२. सुयनाणम्मिवि जीवो वट्टंतो सो न पाउणइ मोक्खं।
जो तव–संजममइए जोगे न चएइ वोढुं जे।।

३. बितियकसायाणुदए अप्पच्चक्खाणनामधेयाणं।

P.T.O

सम्मद्दंसणलंभं विरयाविरइं न उ लहंति।।

प्रश्न ५. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. किन बातों से मति–श्रुत ज्ञान में भेद होता है?

२. चक्षुरिन्द्रिय को छोडकर शेष चार इन्द्रियों का विषय परिमाण कितना है?

३. वेदक सम्यक्त्व कब होता है?

४. कर्मवर्गणा देखने वाले अवधिज्ञानी कितना काल और क्षेत्र देखते हैं?

५. तिष्यगुप्त निह्नव कब और कहां हुआ?

६. अनन्तानुबंधी आदि चार क्रोध कषाय के दृष्टान्त लिखिए।

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(३०)**

१. क्या स्वप्न अवस्था में मन जाकर ज्ञेय पदार्थ के साथ संबंध प्राप्त करता है, विस्तार से समझाइए।

२. क्या कर्म सोपकर्मी है या निरूपकर्मी है?

३. 'कति'द्वार के माध्यम से सम्यक्त्वादि सामायिक का निरूपण कीजिए।

४. नमस्कार की उत्पत्ति के निमित्तों का प्रतिपादन कीजिए।

५. मन के अभाव में ध्यान किस प्रकार होता है, स्पष्ट कीजिए।

६. स्थविर कल्प के क्रम को संक्षिप्त में समझाइए।

७. वैनयिकी बुद्धि को सिद्धपुत्र और उनके दो शिष्य के कथानक से समझाइए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. नववें गणधर को क्या संशय था? भगवान महावीर ने उसका समाधान कैसे किया, समझाइए।

२. गोष्ठामाहिल निह्नव की मान्यता और उसका निराकरण खंडन–मंडन रूप में कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का सटीक जवाब लिखिए। **(१५)**

१. ग्रंथ के आधार से अक्षरश्रुत का विस्तार से प्रतिपादन कीजिए।

२. केवलज्ञान के स्वरूप और गति आदि द्वारों से उसकी प्ररूपणा कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग ३)

प्रश्न क्र. १. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. पाठ पढानेवाले गुरु शिष्य को पूछते हैं।

२. सुरेश सुबह उठकर कार्य करता है।

२. दाता दान दे देकर प्रसन्न होता है।

४. हाथ से फल गिर रहा है।

५. बादल जोर से गरजते हैं।

प्रश्न क्र. २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। **(१०)**

१. पक्षमुक्तः २. यथानुरूपम् ३. महलोपरि

४. श्वेताम्बरः ५. पंचपदम् ६. अनासक्तः

प्रश्न क्र. ३. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. भवान् मुकुलः। भवतः मातापित्रोः स्वास्थ्यं समीचीनं नास्ति। तयोः स्वास्थ्यप्राप्तिः शीघ्रं भवेत् एतदर्थं पत्रं लिखेत्।

२. 'द्विकर्मक धातु में कर्मवाच्य वाक्य बनाने के लिए क्या नियम होते हैं उसे स्वनिर्मित उदाहरण से समझाइए।

३. सत्यानृपा च परुषा ..... सुभाषित को शुद्ध लिखकर उसका अन्वय एवं हिन्दी भावार्थ लिखिए।

४. 'चारित्र्यम्' कथा का सार एवं उससे प्राप्त शिक्षा को अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. कृदन्त का परिचय देते हुए संज्ञार्थक कृदन्त शब्दों के लिए कौन–कौनसे प्रत्यय लगते हैं, उनके नियम सोदाहरण लिखिए।

२. लुट्लकार का प्रयोग किस काल के लिए करते हैं यह बताते हुए, उस लकार के १५ स्वनिर्मित वाक्य लिखिए।

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – २)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित कृदन्त शब्द किस कृदन्त के हैं लिखिए। **(५)**

१. पविट्ठो २ वोत्तव्वं ३. सिक्खिउं ४. दट्ठुण ५. भममाण

प्रश्न क्र. ६. वाच्य परिवर्तन कीजिए। **(५)**

१. सावगेण जिणो अच्चिज्जइ।

P.T.O

२. सामिणा सेवगो जाणिज्जइ।

३. अहं जिणं थुणामि।

४. पिआ कहं कहेइ।

५. तेण हसिज्जइ।

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्ही पांच सवालों का संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु में कौन-से प्रत्यय जोडकर क्या बनाया जाता है?

२. 'अन्' को विकल्प से क्या होता है? इसके रूप किसके समान चलते हैं?

३. सर्वनाम का प्रयोग कितने प्रकार से किया जाता है? कौन-से ?

४. कृदन्त किसे कहते हैं? उसके भेद कितने हैं और कौन-से?

५. ऋकारान्त पुल्लिंग शब्द कितने प्रकार के हैं, कौन-से?

६. वाच्य किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं?

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किन्हीं चार सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(२०)**

१. वाच्य परिवर्तन किसे कहते हैं? उनके कर्ता, कर्म में कौन-कौनसी विभक्ति होती है यह बताते हुए स्वनिर्मित उदाहरण लिखिए।

२. 'संबंधक भूतकृदन्त' का परिचय स्वनिर्मित उदाहरण से दीजिए।

३. 'हेत्वर्थ कृदन्त' का स्वरूप स्वनिर्मित उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

४. 'अमंगलो' कहानी का सार एवं शिक्षा अपने शब्दों में लिखिए।

५. 'पढन्त' और 'पढमाण' शब्द के सभी रूपों को लिखिए।

६. निम्नलिखित गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहई।।

(खण्ड ग – भावना योग एक विश्लेषण)

प्रश्न क्र. ९. ये भावनाये किस भावना में आती हैं, बताइए। **(५)**

१. मैत्री भावना २. चारित्र भावना ३. निर्जरा भावना

४. सम्मोही भावना ५. सूत्र भावना

प्रश्न क्र.१०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. वैराग्य भावना में से किन्हीं पांच भावनाओं का स्वरूप अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

२. योग भावनाओं का स्वरूप अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – प्रमाण नय तत्त्वालोक)

प्रश्न १. अ. निम्नलिखित बातें अनुमान का कौन–सा अवयव है पहचानकर क्रम से लिखिए। **(५)**

१. इस पर्वत में भी धूम है
२. क्योंकि पर्वत में धूम है
३. इसलिए पर्वत में अग्नि है
४. पर्वत में अग्नि है
५. जहां धूम होता है वहां अग्नि होती है

ब. निम्नलिखित भेद किसका है, बताइए। **(५)**

१. संशय २. अनिन्द्रियनिबन्धन ३. तर्क
४. विरुद्धोपलब्धि ५. द्रव्यार्थिक नय

क. निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत, लिखिए। **(५)**

१. अस्पष्ट ज्ञान को परोक्ष प्रमाण कहते हैं।
२. अवग्रह से जाने हुए पदार्थ में विशेष जानने की इच्छा अवाय है।
३. इस ग्रंथ में मंगलाचरण में तीर्थेश का स्मरण किया गया है।
४. यथार्थ वक्ता का कथन विसंवाद सहित होता है।
५. व्याप्ति होने पर भी व्याप्ति का आभास होना तर्काभास है।

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ सूत्रों के ससंदर्भ अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. निर्दोषोऽसौ प्रमाणाविरोधिवाक्त्वात्।
२. तत्र विकलमवधिमन:पर्यायज्ञानरूपतया द्वेधा।
३. स एव दृढतमावस्थापन्नो धारणा।
४. सर्वथा द्रव्यापलापी तदाभास:।
५. कर्तृक्रिययो: साध्यसाधकभावेनोपलम्भात्।
६. पक्षहेतुवचनात्मकं परार्थमनुमानमुपचारात्।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. नय के स्वरूप को समझाकर द्रव्यार्थिक नय के भेदों का निरूपण कीजिए।
२. हेत्वाभास के भेदों–प्रभेदों को समझाइए।
३. वस्तु के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
४. सप्तभंगी के स्वरूप को उदाहरण से समझाइए।
५. प्रतिषेध किसे कहते हैं? उसके भेदों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

P.T.O

१. प्रमाण के स्वरूप का विस्तृत वर्णन कीजिए।

२. अष्टम परिच्छेद का निरूपण अपनी भाषा में लिखिए।

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग १)

प्रश्न ५. निम्न भेद किसके हैं, पहचानकर लिखिए। **(५)**

जैसे – मन अवग्रह – अर्थावग्रह

१. संवर २. स्त्यानर्द्धि ३. अप्रतिपाती

४. व्यंजनाक्षर ५. संघातश्रुत

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. मनुष्य गति नामकर्म २. अनन्तानुबंधी ३. मुक्तजीव

४. प्राभृत–प्राभृत श्रुत

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ गाथा का अर्थ लिखिए। **(४)**

१. एसिं जं आवरणं पडुव्व चक्खुस्स तं तयावरणं।
दंसणचउ पणनिद्दा वित्तिसमं दंसणावरणं।।

२. गोयं दुहुच्चनीयं कुलाल इव सुघऽभुंभलाईयं।
विग्घं दाणे लाभे भोगुवभोगेसु वीरिए य।।

३. परघाउदया पाणी परेसि बलिणं पि होइ दुद्धरिसो।
ऊससणलध्दिजुत्तो हवेइ ऊसासनामवसा।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. अवग्रहादि के द्वारा मतिज्ञान का स्वरूप लिखिए।

२. कर्मपुद्गलों का जीव के साथ कैसा संबंध होता है सोदाहरण समझाइए।

३. वर्ण नामकर्म के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. केवलज्ञान का स्वरूप बताकर शक्ति की अपेक्षा जीव में एक साथ कितने ज्ञान होते हैं, स्पष्ट कीजिए।

२. १४ पिंड प्रकृतियों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **प्रथम खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – दशवैकालिक सूत्र संपूर्ण)

प्रश्न १. अ. एक शब्द में जवाब लिखिए। **(५)**

१. ज्ञान, दर्शन से संपन्न संयमी को ..... कहते हैं। (साधु, असाधु)
२. बुद्ध पुरुष ..... के समान अनिश्रित होते हैं। (पुष्प, मधुकर)
३. प्रत्येक व्यक्ति के पुण्य–पाप ..... होते हैं। (पृथक्–पृथक्, एक)
४. अस्थिरात्मा के लिए ..... वनस्पत्ति का नाम लिया है। (हड, अशोक)
५. धर्मरूपी वृक्ष का उत्कृष्ट रसयुक्त फल ..... है। (स्वर्ग, मोक्ष)

ब. निम्नलिखित अर्थों के प्राकृत शब्द लिखिए। **(५)**

१. दुग्गइवड्ढणं २. पिहुणहत्थेण ३. निहुअप्पणो
४. चयसोगमल्लं ५. अहागडेसु

प्रश्न २. निम्नलिखित किन्हीं ५ गाथाओं का हिंदी अर्थ लिखिए। **(१०)**

१. तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ–खंति–संजमरयस्स।
परिसहे जिणंतस्स, सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स।।

२. वत्थगंधमलंकार, इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चइ।।

३. चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं।
दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो ण भासिज्ज सव्वसो।।

४. पुढवि दग अगणि मारूय, तणरूक्ख सबीयगा।
तसा य पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा।।

५. समुदाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए।।

६. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. गुरु की आशातना को समझाने के लिए कौन–कौनसी उपमाएं दी गयी हैं बताइए।
२. रथनेमि को राजीमती ने कैसे स्थिर किया बताइए।
३. साधु–साध्वियों की आहार करने की सामान्य विधि कैसी होती हैं बताइए।
४. आठ सूक्ष्म जीवों के नाम लिखकर उनकी व्याख्या लिखिए।

P.T.O

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. निर्ग्रन्थाचार में कौन-से अठारह स्थान विराधना के बतलाये है, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

२. दसवें अध्ययन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(खण्ड ख – उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ६ से २०)

प्रश्न ५. अ. अंकों में जवाब दीजिए। **(५)**

१. बाल अविरत जीव की कितनी गति होती हैं?

२. कपिल मुनि ने कितने चोरों को उपदेश दिया?

३. देवेन्द्र ने नमि राजर्षि की परीक्षा के लिए कितने प्रश्न पूछे?

४. शिक्षाशील के कितने लक्षण बताये हैं?

५. चित्त-सम्भूत कितने भवों तक साथ में रहे?

ब. निम्नलिखित प्राकृत शब्द का हिंदी में अर्थ बताइए। **(५)**

१. कागिणिए २. नमि रायरिसी ३. सुदंसणा

४. कायगुत्तो ५. मित्त वग्गा

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के जवाब लिखिए। **(१०)**

१. राजा बलभद्र और मृगावती रानी ने अपने पुत्र का नाम क्या रखा था वह किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

२. संजय अध्ययन में कितने और कौन-से तीर्थंकरों का वर्णन आया है?

३. असमाधि स्थान के कोई भी ४ स्थान बताइए।

४. १४ वें अध्ययन में मुनियों को देखकर दोनों कुमारों ने क्या किया?

५. बहुश्रुत किसे कहते हैं?

६. आयुष्य कितने और कौन-से प्रकार का है?

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. नमि राजर्षि और देवेन्द्र में हुए सवालों में से किन्हीं ५ सवालों को स्पष्ट कीजिए।

२. माणूसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे।
मूलच्छेएण जीवाणं, णरग-तिरिक्खत्तणं धुवं।। इस गाथा को स्पष्ट करें।

३. १२ वें अध्ययन में आये हुए ब्राह्मण और यक्ष के बीच में हुए संवाद को स्पष्ट कीजिए।

४. पाप-श्रमण किसे कहते हैं, अध्ययन के आधार से स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. १५ वें अध्ययन का सार अपनी भाषा में लिखिए।

२. १९ वें अध्ययन में आयी हुई नरक की वेदनाओं को अपनी भाषा में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे प्रथम पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – संस्कृत सुनिधि भाग – ४)

प्रश्न क्र. १. अ. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। **(५)**

१. खरगोश का समूह जंगल में रहता है।
२. तपस्वी की सेवा करनी चाहिए।
३. धैर्यवान् स्त्री ने कष्टों को सहा।
४. वरुण का पुत्र यहां आयेगा।
५. क्षत्रिय के समान सभी की रक्षा करो।

ब. चित्रम् आधृत्य शब्दसूची–सहायतया संस्कृते पञ्चवाक्यानि लिखेयुः। **(५)**

(**शब्दसूची** – हस्ती, शशकाः, बालकाः, वृक्षः, पाषाणः, यानम्, अजा, भल्लुकः, उष्ट्रः, महिला, नरः, कुटीरः, सोपानम्)

प्रश्न क्र. २. मुहावरों का हिंदी अर्थ बताकर संस्कृत में वाक्य में प्रयोग कीजिए। (कोई ५) **(१०)**

१. वीरभोग्या वसुन्धरा
२. कर्णिनी वै भूमै:
३. सम्भूयश्वाभषणम्
४. वैतसीं वृत्तिं आश्रि
५. वाच: कर्मातिरिच्यते
६. विश्रम्भस्थाने मम

प्रश्न क्र. ३. किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. प्रहेलिका का परिचय देते हुए कटु श्लोक का एक उदाहरण अपनी भाषा में लिखिए।
२. स्त्री प्रत्ययों का परिचय स्वनिर्मित उदाहरणों से दीजिए।
३. सार्वनामिक तद्धित प्रत्यय किस–किस विभक्ति के अर्थ में आते हैं, स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।
४. 'यद्धात्रा निजभाल...' सुभाषित का अन्वय एवं हिन्दी भावार्थ अपनी भाषा में, लिखिए।

प्रश्न क्र. ४. 'परोपकारः' इस विषयपर संस्कृत में निबंध लिखिए। **(१०)**

P.T.O

(खण्ड ख – सुबोध प्राकृत व्याकरण भाग – ३)

प्रश्न क्र. ५. निम्नलिखित पदों के समास पहचानिए। **(५)**

१. पइदिणं　　२. कसायमुत्तो　　३. अट्ठाज्झायी

४. हत्थपायं　　५. संतिकरं

प्रश्न क्र. ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. समानाधिकरण बहुव्रीही समास में किस शब्द के प्रयोग से कितने भेद होते हैं? कौन-से?

२. संख्यावाचक शब्द किसे कहते हैं? तद्धित प्रत्यय से ये विशेषणरूप में कितने प्रकार के होते हैं?

३. प्रेरणार्थक क्रिया के वाक्य रचना में प्रेरक कर्ता और मूल क्रिया के कर्ता में कौन-सी विभक्ति होती है?

४. स्वार्थिक प्रत्यय कितने हैं? कौन-से?

५. विग्रह कितने प्रकार के होते हैं? कौन-से?

६. विभक्ति कितने प्रकार की होती हैं? कौन-सी?

प्रश्न क्र. ७. निम्नलिखित किन्हीं दो सवालों के यथोचित जवाब लिखिए। **(१०)**

१. तृतीया विभक्ति का प्रयोग कहां-कहां होता है? स्वनिर्मित उदाहरणों द्वारा लिखिए।

२. 'गयाणुगइओ लोगो' इस कथा का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

३. मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं? उसका स्वरूप स्वनिर्मित उदाहरणों से लिखिए।

४. 'अट्ठ कम्माइं वोच्छामि .....' गाथा का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न क्र. ८. निम्नलिखित किसी एक सवाल का यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१५)**

१. अव्ययों का परिचय देते हुए निम्नलिखित अव्ययों से स्वनिर्मित प्राकृत वाक्य लिखिए।

मा, पइदिणं, जाव, णमो, पुणरवि, मुहा, उवरि, अइरं, अवि, अहुणा, पच्छा, तीअं, कया, अकट्टु, अईव

२. प्राकृत की प्रमुख विशेषताओं का स्वरूप अपनी भाषा में सोदाहरण लिखिए।

(खण्ड ग – ज्ञाताधर्मकथा सूत्र)

प्रश्न क्र. ९. गुरु-शिष्यों की जोड लगाइए। **(५)**

अ – स्तंभ		**ब – स्तंभ**
१. धर्मरुचि	–	अ. सुव्रता आर्या
२. जिनपाल	–	ब. थावच्चापुत्र
३. सुकुमालिका	–	क. धर्मघोष मुनि
४. पोट्टिला	–	ड. भगवान महावीर
५. शुकदेव संन्यासी	–	इ. गोपालिका आर्या

प्रश्न क्र. १०. निम्नलिखित किसी एक सवाल का विस्तार से जवाब लिखिए। **(१५)**

१. थावच्चापुत्र के साथ हुए शुक परिव्राजक के संवाद को अपनी भाषा में स्पष्ट कीजिए।

२. 'चन्द्र' अध्ययन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे द्वितीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – कर्मग्रन्थ भाग २)

प्रश्न १. अ. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तम्भ		**ब स्तम्भ**
१. बन्धयोग्य प्रकृतियां	–	अ. अन्तर्मुहूर्त
२. योगों से रहित केवली	–	ब. आहारक लब्धि
३. १२वें गुणस्थान की स्थिति	–	क. संवासानुमति
४. १४ पूर्वधारी मुनि	–	ड. १२०
५. अनुमति का भेद	–	इ. अयोगिकेवली

ब. निम्न गुणस्थानों में कितनी प्रकृतियों का बन्धविच्छेद होता है, लिखिए। **(५)**

१. सूक्ष्मसंपराय २. मिश्र ३. अयोगिकेवली
४. प्रमत्तसंयत ५. क्षीणमोह

प्रश्न २. निम्न संज्ञा के अंतर्गत कौन–सी कर्म प्रकृतियां आती हैं, लिखिए। (कोई ५) **(१०)**

१. वर्णचतुष्क २. अगुरुलघुचतुष्क ३. संस्थानषट्क
४. हास्यादिषट्क ५. स्थावर चतुष्क ६. नरकत्रिक

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. सास्वादन गुणस्थान के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
२. बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, अबाधाकाल इनका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
३. सत्तायोग्य १४८ प्रकृतियां क्यों मानी गयी है?
४. अनिवृत्ति गुणस्थान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. पांचवें गुणस्थान में उदययोग्य कितनी प्रकृतियां होती हैं उसे स्पष्ट करके वैक्रिय द्विक का उदय पांचवें गुणस्थान में क्यों नहीं होता स्पष्ट कीजिए।
२. पहले गुणस्थान के अंत में कौन–सी कर्म प्रकृतियों का बन्धविच्छेद होता है विस्तार से बताइए।

(खण्ड ख – कर्मग्रन्थ भाग ३)

प्रश्न ५. अ. ये कौन–सी मार्गणा के भेद हैं, लिखिए। **(५)**

१. अवधिज्ञान २. नपुंसक ३. सासादन

P.T.O

४. वनस्पति ५. अविरति

ब. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(५)**

मार्गणा	गुणस्थान	बन्धयोग्य कर्म प्रकृतियां
१. शुक्ललेश्या	८वां	.....
२. कार्मण काययोग	.....	७५
३. त्रसकाय	५वां	.....
४. पर्याप्त मनुष्य	.....	१७
५. पंकप्रभा	३रा	.....

प्रश्न ६. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ की परिभाषा लिखिए। **(६)**

१. गति २. संज्ञी ३. सम्यक्त्व

४. लेश्या

ब. **निम्नलिखित किन्हीं २ गाथाओं का अर्थ लिखिए।** **(४)**

१. सव्वगुणभव्वसन्निसु ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छसमा।
सासणि असन्नि सन्नि व्व कम्मभंगो अणाहारे।।

२. आहारछग विणोहे चउदससउ मिच्छि जिणपणगहीणं।
सासणि चउनवइ विणा नरतिरिआऊ सुहुमतेर।।

३. परमुवसमि वट्टंता आउ न बंधति तेण अजयगुणे।
देवमणुआउहीणो देसाइसु पुण सुराउ विणा।।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं ३ सवालों के जवाब लिखिए। **(१५)**

१. पहले ३ नरकों में कौन-से गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है बताइए।

२. देवगति में सामान्य से कितनी प्रकृतियों का बंध होता है, स्पष्ट कीजिए।

३. पर्याप्त तिर्यंचों के चौथे और पांचवें गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है स्पष्ट कीजिए।

४. प्रत्याख्यानावरण कषाय में कौन-से गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब लिखिए। **(१५)**

१. १४ मार्गणाओं का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

२. संयम मार्गणा के भेदों में कौन-से गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है संक्षिप्त में लिखिए।

।। ॐ अर्हन्।।

श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज मार्ग, अहमदनगर – ४१४००१ (महाराष्ट्र)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर परीक्षायाम्

वीर संवत् २५५१ **द्वितीय खण्डे तृतीय पत्रम्**

सन् २०२४ **समय : घण्टात्रयम् (९ से १२ बजे तक)** **सम्पूर्णांका: १००**

(खण्ड क – नन्दी सूत्र)

प्रश्न १. अ. निम्न तक्ता पूर्ण कीजिए। **(१०)**

आगम	श्रुतस्कंध	अध्ययन/वर्ग	उद्देशनकाल	पद परिमाण
१. उपासकदशांग सूत्र	.....	.....	.....	.....
२. अनुत्तरौपपातिक सूत्र	.....	.....	.....	.....
३. समवायांग सूत्र	.....	.....	.....	.....
४. सूत्रकृतांग सूत्र	.....	.....	.....	.....
५. विपाक सूत्र	.....	.....	.....	.....

ब. जोड लगाइए। **(५)**

अ स्तम्भ		ब स्तम्भ
१. भव्य भवन	–	अ. सत्तरह प्रकार का संयम
२. चक्र का तुम्ब	–	ब. अक्रियावाद
३. दीर्घ नाल	–	क. स्वाध्याय
४. राहु	–	ड. उत्तर गुण
५. मगरमच्छ	–	इ. श्रुत रत्न

प्रश्न २. अ. निम्नलिखित किन्हीं ३ गाथाओं का अर्थ लिखिए। **(६)**

१. परतित्थिय गहपहनासगस्स, तवतेय दित्तलेसस्स।
नाणुज्जोयस्स जए, भद्दं दमसंघ सूरस्स।।

२. कालिय सुय अणुओगस्स धारए, धारए य पुव्वाणं।
हिमवंत खमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए।।

३. भरहम्मि अद्धमासो जंबुद्दीवम्मि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए वासपुहुत्तं च रुयगम्मि।।

४. सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निजुत्तिमीसिओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे।।

ब. निम्नलिखित किन्हीं २ की परिभाषा लिखिए। **(४)**

१. औत्पत्तिकी बुद्धि २. कर्मजा बुद्धि ३. वैनयिकी बुद्धि

प्रश्न ३. निम्नलिखित किन्हीं ४ सवालों के जवाब लिखिए। **(२०)**

१. ऋजुमति और विपुलमति मन:पर्यव ज्ञान का द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के आधार पर निरूपण कीजिए।

P.T.O

२. नासिकपुर का सुन्दरीनन्द किस बुद्धि से संबंधित है? क्यों?

३. घडे और गौ के माध्यम से श्रोत्रा के प्रकार को समझाइए।

४. गणिपिटक की शाश्वतता पर प्रकाश डालिए।

५. श्रुतज्ञान का अधिकारी कौन बनता है, विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. अवधिज्ञान के भेद-प्रभेदों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

२. श्रुतज्ञान का स्वरूप समझाकर निम्नलिखित श्रुतज्ञान के भदों पर प्रकाश डालिए।

अ. अक्षर श्रुत ब. अनक्षर श्रुत क. संज्ञी श्रुत ड. असंज्ञी श्रुत

(खण्ड ख – भारतीय दर्शन)

प्रश्न ५. उचित पर्याय चुनकर लिखिए। **(५)**

१. गुड में ..... का अभाव है। (मादकता, उन्मत्तता, जडता)

२. भौतिक पदार्थों में ..... पाए जाते हैं। (विषाणु, जीवाणु ,परमाणु)

३. गीता में ..... भक्ति की ही प्रधानता है। (कृष्ण, ईश्वर, शिव)

४. चार्वाक दर्शन ..... दर्शन है। (आस्तिक, नास्तिक, आस्तिक-नास्तिक)

५. ..... में संज्ञा तथा संज्ञा के संबंध का ज्ञान होता है। (आगम, अनुमान, उपमान)

प्रश्न ६. निम्नलिखित किन्हीं ५ सवालों के संक्षेप में जवाब लिखिए। **(१०)**

१. गीतानुसार ज्ञान के भेद और व्याख्या लिखिए।

२. न्याय और वैशेषिकों में किन बातों के लेकर मतभेद है?

३. सांख्यों के साहित्य के नाम लिखिए।

४. अहंवित्ति किसे कहते हैं?

५. क्या जैनदर्शन संशयवाद हैं?

६. बौद्ध मतानुसार निर्वाण के लाभ बताइए।

प्रश्न ७. निम्नलिखित किन्हीं २ सवालों के यथानिर्दिष्ट जवाब लिखिए। **(१०)**

१. न्यायदर्शनानुसार कितने प्रकार के शब्द हैं, स्पष्ट कीजिए।

२. प्रतिबिंबवाद और अवच्छेदवाद के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

३. चार्वाक शब्द को प्रमाण क्यों नहीं मानते हैं?

४. मीमांसा दर्शन का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

प्रश्न ८. निम्नलिखित किसी १ सवाल का जवाब विस्तार से लिखिए। **(१५)**

१. वैदिक धर्म में देवताओं का क्या स्थान है, समझाइए।

२. अस्तिकाय और अनस्तिकाय द्रव्यों का वर्णन कीजिए।